04 - हिंदू पंचांग और कालगणना

05 - स्त्री-शक्ति के नौ रूप नवजीवन के प्रतीक

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 30 मार्च, 2025

06 - नव वर्ष - नव संकल्प

07 - परदे पर पति-पत्नी के नाजुक रिश्ते के कई रंग

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 169, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

ब्लॉग

विक्रम सम्वत्: प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास का उत्सव

डॉ. मोहन यादव

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

– भारतीय नववर्ष की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं...

आज से विक्रम सम्वत् 2082 आरंभ हुआ है। यह प्रदेशवासियों के लिये गर्व और गौरव का विषय है कि भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् के उज्जयिनी से शुरू हुआ। यह सम्राट विक्रमादित्य के राज्याभिषेक की तिथि है। सम्राट विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांताओं को पराजित कर विक्रम सम्वत् का प्रवर्तन किया था। न्यायप्रियता, ज्ञानशीलता, धैर्य, पराक्रम, पुरुषार्थ, वीरता और गंभीरता जैसी विशेषताओं के लिए सम्राट विक्रमादित्य को समूचे विश्व में स्मरण किया जाता है। उन्होंने सुशासन के सभी सूत्रों को स्थापित करते हुए अपने सुयोग्य 32 मंत्रियों का चयन किया, इसीलिए उनके सिंहासन को 'सिंहासन बत्तीसी' कहा जाता है।

भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन ऋतु परिवर्तन के अनुरूप स्वयं को सक्षम बनाने का समय है। इसे कहीं 'गुड़ी पड़वा' तो कहीं 'चैती चांद', कहीं 'युगादि' तो कहीं 'उगादि' और कहीं 'नवरोज अगदु' के रूप में मनाया जाता है। विविध स्वरूपों में मनाया जाने वाला नववर्ष का यह पर्व 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को स्थापित करता है। इसके साथ नवरात्र का आरंभ होता है। यह नौ दिन आरोग्य, साधना और कायाकल्प के लिए होते हैं।

नवसम्वत्सर की तिथि सृष्टि निर्माण की तिथि है। इसका निर्धारण संपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ हुआ है। इसे मनाने की परंपरा व्यक्ति, परिवार और समाज, तीनों के स्वस्थ जीवन और समृद्धि को ध्यान में रखकर शुरू की गई। यह हमारे पूर्वजों के शोध की विशेषता है कि हजारों वर्ष पहले पूर्वजों को ग्रहों की गति और नक्षत्रों की स्थिति का पूर्ण ज्ञान था और इस गणना को ही वैदिक घड़ी कहा गया है। बाबा महाकाल की नगरी विश्व में कालगणना का केंद्र रही है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता है कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उज्जैन की वेधशाला में स्थित विश्व की पहली विक्रमादित्य वैदिक घड़ी की पुनर्स्थापना की है।

मुझे यह बताते हुए खुशी है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं के प्रकटीकरण के लिए हम विक्रमोत्सव का आयोजन कर रहे हैं। विक्रमोत्सव हमारी गौरवशाली विरासत और वर्तमान के विकास का उत्सव है। यह उत्सव 26 फरवरी से प्रारंभ होकर 30 जून तक चलेगा। इस 125 दिन तक चलने वाले उत्सव में विविध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रमों के साथ सम्राट विक्रमादित्य के समूचे व्यक्तित्व, कृतित्व और विशेषताओं को परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है। आगामी 12-13 और 14 अप्रैल 2025 को नई दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य पर केन्द्रित एक भव्य आयोजन होने जा रहा है।

श्रीकृष्ण की दीक्षा नगरी उज्जयिनी का संबंध भारत की हर विशेषता से है। उज्जैन धरती के केन्द्र में स्थित है। यहां भगवान श्रीकृष्ण ने सांदीपनि आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी। मध्यप्रदेश सरकार ने संकल्प लिया है कि सांदीपनि आश्रम से श्रीकृष्ण पाथेय के निर्माण का आरंभ होगा।

मध्यप्रदेश का 2025-26 का बजट प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प को केन्द्र में रखकर प्रस्तुत किया गया है। इसमें विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण की अवधारणा अनुसार बजट को बहुआयामी स्वरूप दिया गया है। इस बजट में आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के साथ विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि का भी प्रावधान है। वर्ष भर के संकल्पों की पूर्ति के लिए हमने बजट में 15 प्रतिशत की वृद्धि की है। हमारा यह बजट मध्यप्रदेश की समृद्धि और आत्मनिर्भरता के लिए बनाये रोडमैप के संकल्प की पूर्ति के लिए है। इसमें आर्थिक सुधार, सामाजिक न्याय, सतत् विकास के साथ प्रधानमंत्री जी का मंत्र, ज्ञान, (GYAN) पर ध्यान शामिल है। ज्ञान के चारों स्तंभों को सशक्त करने के लिए बजट में विशेष प्रावधान हैं। इसमें गरीब कल्याण (G) में अंत्योदय की अवधारणा को साकार किया जायेगा। युवा शक्ति (Y) में कौशल विकास, प्रशिक्षण तथा रोज़गार के अवसर प्रदान किये जायेंगे। अन्नदाता (A) में किसानों की आय में वृद्धि करने के साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जायेगा। नारी शक्ति (N) में महिलाओं को समग्र रूप से सशक्त बनाने के लिए आयोजना बनाई गई है।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हमें विरासत से विकास का सूत्र दिया है। उनके नेतृत्व में समाज, प्रदेश और देश को सशक्त बनाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार अपनी तरह से कार्य कर रही है। मुझे बताते हुए खुशी है कि प्रधानमंत्री जी के 'विरासत के साथ विकास' मंत्र को प्रदेश में धरातल पर उतारने का प्रयास किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और पुरातात्विक स्थलों के विकास के लिए बजट में अलग से प्रावधान किया है। ऐतिहासिक विरासत को सहेजने के इस अभियान में ओंकारेश्वर, उज्जैन, मैहर आदि धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा। वर्ष 2028 में होने वाले सिंहस्थ पर्व के आयोजन की भव्यता और दिव्यता के लिए दो हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। श्रीराम वन गमन पथ और श्रीकृष्ण पाथेय के लिए अलग से बजट है। हम इन स्थानों पर अधोसंरचना विकास के साथ पर्यटन को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी कार्य करेंगे। इससे स्थानीय लोगों को रोज़गार मिलेगा और मध्यप्रदेश की विरासत संसार के सामने आएगी।

प्रधानमंत्री जी के लोकल फॉर वोकल के संकल्प को आकार देने के लिए रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और ग्लोबल इंडस्ट्री समिट में प्राप्त प्रस्तावों को धरातल पर उतारा जायेगा। इससे मध्यप्रदेश के हर क्षेत्र की विशेषता, क्षमता और दक्षता विश्व स्तर तक पहुंचेगी। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को पूर्ण करने के लिए हम प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वर्ष 2047 तक 2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

गुड़ी पड़वा के अवसर पर हमारी परंपरा में सूर्योदय के पहले बहते हुए स्वच्छ जल में स्नान करने का विधान है। ऊषाकाल में सूर्य को प्रणाम किया जाता है। यह जलस्रोत के प्रवाह स्थल को सुरक्षित रखने का संकल्प है। प्रकृति के इस संदेश को स्वरूप प्रदान करते हुए हम प्राकृतिक स्रोतों की सुरक्षा के लिए आज से जल गंगा अभियान शुरू कर रहे हैं। इसकी शुरुआत उज्जैन के क्षिप्रा तट से होने जा रही है। इसमें जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्षा जल संचयन, जलस्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया गया है। इसके अंतर्गत 1 लाख जलदूत तैयार किये जायेंगे। लघु एवं सीमांत किसानों के लिए 50 हजार नए खेत-तालाब बनाए जाएंगे। प्रदेश की 50 से अधिक नदियों के वॉटरशेड क्षेत्र में जल संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य होंगे। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के तालाबों, जलस्रोतों एवं देवालयों में कार्य किए जाएंगे। यह अभियान आज से प्रारंभ होकर 30 जून तक चलेगा। मुझे विश्वास है कि यह अभियान प्रदेश में जल संकट को खत्म करने और भावी पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

भारतीय नववर्ष प्रकृति के संरक्षण, संवर्धन और निर्माण की प्रेरणा देता है। इसमें सृष्टि, संस्कृति और समाज का संगम है। ऋतुकाल संधि के इन दिनों में नवचेतना, नवजागृति का संदेश है। मैं प्रदेश की साढ़े आठ करोड़ जनता के साथ प्रकृति के नवसृजन और विकसित मध्यप्रदेश निर्माण का संकल्प लेता हूं। मुझे उम्मीद है कि इस वर्ष आरंभ होने वाले विशेष प्रयास आप सभी के जीवन में समृद्धि, खुशहाली और आनंद लेकर आएंगे।

यह वर्ष आप सभी के लिए मंगलमय हो, शुभ हो। एक बार पुनः भारतीय नववर्ष की शुभकामनाएं।

सुप्रभात

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

बहुत दिनों बाद दिखी गोरैया
उतरी धरा पर गगन से
आवाहन करने संवत्सर का
ढूँढ़ती रही वह,वही खुला आंगन

पुकारा उसने जाने किसे
क्या कह गयी किससे,पता नहीं
शायद खोजती रही वही आंगन
खो गया जो मकान में

घर भी खोया मकान में
मकान खो गया बंद दरवाजों में
दरवाजे गलियों में
गलियां अंधेरों में

नव संवत्सर पर चहकने लगी गोरैया
तो खुली गलियां फैला उजाला
घर आया बाहर मकान के
आंगन ने भर लिया उजास अपनी बाहों में

अपना लगा यह सब नयेपन में
घर, मकान,दरवाजे, गलियां..
बंद रास्ते खुले तो फूल झरे
हर्षित हो जुड़े नव संवत्सर से।

शत शत सहस्त्राब्दी यह दिन और रात !

– अमरेंद्र मिश्र

शक्ति की आराधना का पर्व चैत्र नवरात्रि आज से

हिंदू नववर्ष की भी शुरुआत, घटस्थापना के लिए 2 मुहूर्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज 30 मार्च से चैत्र नवरात्रि शुरू होगी। 6 अप्रैल को इसका आखिरी दिन रहेगा। इस बार एक तिथि घटने से 8 दिन का त्योहार रहेगा। 30 तारीख को घटस्थापना के लिए दो ही मुहूर्त रहेंगे। ये नवरात्रि गुड़ी पड़वा से शुरू होती है और रामनवमी पर खत्म होती है। हिंदू नववर्ष के साथ शुरू होने के कारण ये साल की पहली नवरात्रि होती है। इस वक्त वसंत ऋतु होने से इसे वासंती नवरात्रि भी कहते हैं। इन दिनों देवी पूजा के साथ व्रत पर ज्यादा जोर दिया जाता है। वजह ये कि आयुर्वेद के मुताबिक वसंत ऋतु शुरू होते ही बीमारियां बढ़ती हैं। इस मौसम में खानपान पर ध्यान देने से बीमार नहीं होंगे। नवरात्रि पर मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। इस बार मां दुर्गा हाथी पर सवार होकर आएंगी। सर्वार्थ सिद्धि, ऐंद्र समेत अन्य शुभ योग में नवरात्रि शुरू होगी। इस बार चैत्र नवरात्रि में 9 नहीं 8 ही व्रत रखे जाएंगे, क्योंकि तृतीया तिथि का क्षय हो रहा है। नवरात्रि

के पावन अवसर पर लोग मां दुर्गा की पूजा और कलश स्थापना करते हैं। नवरात्रि के दौरान माता का शृंगार किया जाता है। मान्यता है कि व्रती महिलाएं अखंड सौभाग्य प्राप्त कर सकती हैं। कलश स्थापना करने के लिए चित्रा नक्षत्र और वैधृति योग का त्याग करके ही कलश बैठाना चाहिए। इस बार नवरात्रि पर ऐसा संयोग बन रहा है कि चित्रा नक्षत्र नहीं लग रहा है। साथ ही वैधृति योग भी शाम में 5 बजकर 54 मिनट पर लग रहा है। ऐसे में इस बार आप आसानी सुबह से ही शुभ मुहूर्त में अपने घर पर कलश स्थापना कर सकते हैं।

म्यांमार में भूकंप से 'हाहाकार'

- 1644 की मौत,10 हजार लोगों के मरने की आशंका, हर ओर 'तबाही' का मंजर

2300 से ज्यादा लोग घायल, मोदी ने सैन्य सरकार के प्रमुख से की बात

नेपीदा (एजेंसी)। म्यांमार में शुक्रवार को आए भूकंप में मौत का आंकड़ा 10 हजार से ज्यादा हो सकता है। यह आशंका यूनाइटेड स्टेट जियोलॉजिकल सर्वे ने जताई है। भूकंप के झटके थाईलैंड, बांग्लादेश, चीन और भारत तक महसूस किए गए। रॉयटर्स के मुताबिक म्यांमार की सैन्य सरकार ने कहा है कि मरने वालों का आंकड़ा 1644 को पार कर गया है, जबकि 2300 से ज्यादा लोग घायल हैं। उधर, थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक 30 मंजिला इमारत गिर गई है। इसमें 10 लोगों की मौत हुई है। म्यांमार में शुक्रवार सुबह 11.50 बजे 7.7 तीव्रता का भूकंप आया। म्यांमार और थाईलैंड में यह 200 साल का सबसे बड़ा भूकंप है। भारी तबाही के चलते म्यांमार के 6 राज्यों और पूरे थाईलैंड में इमरजेंसी लगा दी गई है। भूकंप के बाद भारत ने म्यांमार को 15 टन राहत सामग्री की पहली खेप भेज दी है। इसे 'ऑपरेशन ब्रह्मा' नाम दिया गया है।

वहीं, पीएम मोदी ने म्यांमार की जनता सरकार के प्रमुख जनरल मिन आंग ह्लाइंग से बातचीत की। पीएम ने कहा कि करीबी दोस्त और पड़ोसी के रूप में, भारत इस कठिन समय में म्यांमार के लोगों के साथ मजबूती से खड़ा है। दक्षिण कोरिया म्यांमार में भूकंप पीड़ितों के लिए 2 मिलियन डॉलर (करीब 16.5 करोड़ रुपए) की सहायता प्रदान करेगा। यह मदद इंटरनेशनल ह्यूमन ऑर्गेनाइजेशन के जरिए से भेजी जाएगी। मलेशिया की सरकार ने बताया कि म्यांमार में रेस्क्यू ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए 25-25 लोगों की दो टीम भेजी जाएंगी।

भारत ने भेजी मदद

म्यांमार में आए भूकंप के बाद भारत ने मदद भेजी है। 15 टन वाली राहत सामग्री की पहली खेप वहां पहुंच गई है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने ने कहा कि इसे 'ऑपरेशन ब्रह्मा' नाम दिया गया है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को सोशल मीडिया पर लिखा कि

म्यांमार के लोगों के लिए पहली खेप के रूप में तात्कालिक मानवीय सहायता भेजी गई है। उन्होंने बताया कि भारतीय वायु सेना का सी-130 प्लेन कंबल, तिरपाल, स्वच्छता किट, स्लीपिंग बैग, सोलर लैंप, फूड पैकेट और किचन सेट ले जा रहा है। प्लेन में एक सर्च और रेस्क्यू टीम के अलावा मेडिकल टीम भी है। जयशंकर ने कहा कि हम स्थिति पर नजर बनाए रखेंगे और आगे भी सहायता भेजी जाएगी।

नव संवत्सर सभी के जीवन में सुख- समृद्धि और आनंद का भाव लाए: मुख्यमंत्री

सीएम को भेंट की गई चार गुड़ी, वृहद मराठी समाज के साथ मनाई गुड़ी पड़वा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पर्व और त्योहारों का निर्धारण मंगल तिथियां के आधार पर होता है। खगोलीय गतिविधियों की दृष्टि से गुड़ी पड़वा अर्थात प्रतिपदा, वर्ष की पहली मंगल तिथि है। इसी आधार पर होली, दीपावली जैसे त्योहारों की तिथियों का निर्धारण होता है। इस मंगल तिथि का अभिवादन कहीं चेटीचंड, कहीं वर्ष प्रतिपदा और कहीं गुड़ी पड़वा सहित अन्य अनेक नाम से किया जाता है। यह प्राचीन सनातन संस्कृति की अनुपम परंपरा है, इसी तिथि पर चहुओर खुशियों, समृद्धि और हर्षोल्लास का वातावरण होता है। गुड़ी पड़वा पर घर-घर स्थापित होने वाला कलश हमारी पवित्र आत्मा को अभिव्यक्त करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समृद्धि और विकास का नव संवत्सर सभी के जीवन में सुख- समृद्धि और आनंद का भाव लाए, ईश्वर से यही कामना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, प्रदेश के वृहद मराठी समाज द्वारा गुड़ी पड़वा के संदर्भ में मुख्यमंत्री निवास के सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का समाज बंधुओं ने मंत्रोच्चार के बीच तिलक कर स्वागत किया और अंगवस्त्र एवं श्रीफल भेंट कर उनका अभिवादन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को मराठी साहित्य अकादमी, श्री संत सेवा संघ पुणे, पिपलानी गणेश मंडल भोपाल और कोलार महाराष्ट्र मंडल भोपाल की ओर से परम्परागत गुड़ी भेंट की गई। मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने मध्यप्रदेश मराठी साहित्य संघ, भोपाल द्वारा प्रकाशित पत्रिका भोजपत्र का विमोचन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में संस्कृत उत्कर्ष का महायज्ञ चल रहा है। यह सनातन, साहित्यिक, सांस्कृतिक पहलुओं के साथ ही सभी पर्व और त्योहारों के उत्कर्ष का अवसर है। वसुदेव कुटुंबकम का भाव सबको साथ लेकर चलने और सब के प्रति सद्भाव रखने का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति के सभी त्योहारों को समाज और सरकार मिलकर पूर्ण आनंद और उल्लास के साथ मनाएं इस दिशा में सरकार निरंतर कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विक्रम उत्सव के माध्यम से सम्राट विक्रमादित्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं को जन सामान्य के सामने लाने का प्रयास किया जा रहा है। सम्राट विक्रमादित्य और शिवाजी महाराज जैसे महापुरुषों के प्रसंग से जीवन प्रबंधन और आत्म गौरव के अनेक सूत्र प्राप्त होते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने त्योहार और पर्व का अंतर बताते हुए कहा कि जन्माष्टमी, राम नवमी, नवरात्रि, एकादशी, द्वादशी आदि जिन अवसरों पर उपवास रखा जाए वह पर्व हैं। होली, दीवाली जैसे मंगल कामनाओं और आनंद के साथ मनाए जाने वाले अवसर त्योहार हैं। त्योहारों की बधाई देना उचित है बाकी अवसरों पर मंगल कामनाओं का आदान-प्रदान किया जाना चाहिए। इसी प्रकार परीक्षा तथा अन्य ऐसे कार्यों के लिए जाने वाले व्यक्ति को शुभकामनाएं देना, उनके प्रति शुभेच्छा प्रकट करना उचित रहता है।

सुकमा में 17 नक्सलियों का खात्मा, बड़ी कामयाबी

सुकमा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सुकमा और दंतेवाड़ा जिले की सरहद पर शनिवार सुबह पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) और सीआरपीएफ के 500-600 जवानों ने 17 नक्सलियों को मार गिराया। मामला केरलापाल थाना क्षेत्र के उपमपल्ली का है। मारे गए नक्सलियों में नक्सल संगठन में स्पेशल जोनल कमेटी मेंबर जगदीश उर्फ बुधरा भी शामिल है। बुधरा पर 25 लाख का इनाम घोषित था। बुधरा दरभा घाटी के झीरम कांड में शामिल था। इस वारदात में कांग्रेस नेता महेंद्र कर्मा समेत कई बड़े कांग्रेसी लीडर मारे गए थे।

नक्सलवाद पर एक और प्रहार: अमित शाह

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने सुकमा में एक अभियान में 17 नक्सलियों को ढेर कर दिया है। ऑटोमैटिक हथियारों का एक बड़ा जखीरा बरामद किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम 31 मार्च 2026 से पहले नक्सलवाद को खत्म करने के लिए संकल्पित हैं। शाह ने कहा कि हथियार और हिंसा से बदलाव नहीं आ सकता, केवल शांति और विकास ही बदलाव लाया जा सकता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 30 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सलमान के राम मंदिर वाली घड़ी पहनने पर भड़के मौलाना

कहा-शरीयत का गुनहगार, भाजपा विधायक बोले-राम सबके, उन्हें हिंदुओं ने सिर पर बैठाया

भोपाल (नप्र)। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान की राम मंदिर स्पेशल एडिशन घड़ी पहनने को लेकर विवाद खड़ा हो गया। है। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी ने इसे शरीयत के खिलाफ बताते हुए सलमान को 'गुनहगार' करार दिया है।

इधर, भोपाल के विधायक रामेश्वर शर्मा ने सलमान खान का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि राम सबके हैं। जो राम लोगों के दिलों में हैं, उन्हें नमन करने में किसी को परहेज नहीं होना चाहिए। हर सलमान-रसखान बनने के लिए आतुर है।

राम हर हिंदुस्तानी के दिल में बसे हैं-विधायक शर्मा- भाजपा विधायक शर्मा ने कहा कि राम मंदिर और भगवान राम की छवि भारत के लोगों के दिलों में बसी है। इसे नमन करने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। राम से अलग न तो हिंदुस्तान को किया जा सकता है, न ही हिंदुस्तानियों को।

उन्होंने कहा कि सलमान खान जैसे मुस्लिम सेलेब्रिटीज ने देश की शान बढ़ाई है, जबकि कुछ मौलवी सिर्फ विवाद फैलाते हैं। आज एक मौलवी चला जाए तो चार मुसलमान कंधा नहीं देते, लेकिन सलमान के पीछे लाखों लोग खड़े हो जाते हैं। हिंदुओं ने सलमान को सिर पर बैठाया है।

मां ने दी थी सलमान को स्पेशल एडिशन घड़ी- सलमान खान हाल ही में अपनी मोस्ट अवेटेड फिल्म 'सिकंदर' के प्रमोशन के दौरान इस घड़ी में नजर आए थे, जो उनकी मां ने उन्हें गिफ्ट की थी। बताया जा रहा है कि इस घड़ी की कीमत 34 लाख रुपए है और दुनिया में इसकी सिर्फ 49 यूनिट्स ही बनी हैं।

मौलाना ने कहा था- सलमान को खुदा के यहां मुंह दिखाना है- मौलाना शहाबुद्दीन बोले- सलमान एक मशहूर मुसलमान हैं। लाखों की तादाद में उनके चाहने वाले हैं। सलमान ने राम मंदिर के प्रचार के लिए बनाई गई घड़ी पहनी। किसी भी मुसलमान को शरीयत इस बात की इजाजत नहीं देती कि वो गैर-मुस्लिमों के मंदिरों का प्रचार करें।अगर कोई मुसलमान ऐसा करता है तो वह शरीयत का मुजरिम है। ये नाजायज और हराम है, बाज आना चाहिए। मैं सलमान खान को नसीहत देना चाहता हूं कि वो अपने हाथों से राम मंदिर की घड़ी उतार दें और जो कुछ भी शरीयत के खिलाफ काम किया है उससे तौबा कर लें। क्योंकि उनको खुदा के यहां मुंह दिखाना है। अपना हिसाब-किताब करना है। वो एक अच्छे मुसलमान होने का सबूत पेश करें।

कमाल राशिद ने कहा- मुस्लिमों का मजाक उड़ा रहे सलमान- कमाल राशिद खान ने अपने ऑफिशियल एक्स प्लेटफॉर्म पर लिखा है- उन सभी मुस्लिमों को मुबारकबाद जो ईद पर सलमान खान की सिकंदर देखकर उन्हें ईदी देना चाहते हैं। वो राम जन्मभूमि एडिशन की जियोनिस्ट को. वॉच पहनकर सभी मुस्लिमों का मजाक उड़ा रहा है। इसके सभी मुस्लिम फैंस बेशर्म हैं।

ग्रामीण समुदायों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं का विस्तार

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के सशक्त नेतृत्व और मार्गदर्शन में, एम्स भोपाल की एक समर्पित डॉक्टरों की टीम मुरैना जिले में आयोजित रोटरी मेडिकल मिशन - राहत-2025 के 26 मार्च से 2 अप्रैल 2025 तक चलने वाले मेगा हेल्थ कैंप में पूर्ण अवधि के लिए भाग ले रही है। इस मेगा हेल्थ कैंप का उद्घाटन मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा किया गया। एम्स भोपाल की ओर से डॉ. अनिंदो मजूमदार, डॉ. अनंथन, डॉ. अदिति भारती, डॉ. कविता आर वी, डॉ. अग्निशिखा चौधरी, डॉ. वैष्णवी गावंडे, डॉ. कपिल प्रजापत और डॉ. आकांक्षा पाटिल जैसे अनुभवी चिकित्सक इस शिविर में क्लिनिकल कंसल्टेशन, रेफरल सेवाएं और स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

थर-थर कांपेंगे दुश्मन, सेना को मिलेंगे 156 प्रचंड हेलीकॉप्टर

● 62 हजार करोड़ की डील

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना की ताकत को नई मजबूती मिलने वाली है। कैबिनेट सुरक्षा समिति ने 156 लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टरों की खरीद को मंजूरी दे दी है। सेना और वायु सेना के लिए यह खरीदारी 62,000 करोड़ रुपये से अधिक लागत में होगी। यह अब तक का हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड का सबसे बड़ा ऑर्डर

है। इन हेलीकॉप्टरों को कर्नाटक के बेंगलुरु और तुमकुर स्थित हाल के प्लांट्स में बनाया जाएगा। रक्षा सूत्रों ने बताया कि इन 156 हेलीकॉप्टरों में भारतीय सेना को 90 और वायु सेना को 66 मिलेंगे। ये चीन और पाकिस्तान सीमा पर तैनाती के लिए बेहद अहम हैं। इससे विस्तार की दिशा में मदद मिलेगी।

जयपुर में तेजाजी मंदिर में मूर्ति तोड़ने पर हंगामा

● नारेबाजी कर रहे लोगों को पुलिस ने हटाया, टोंक रोड का जाम खुला

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में वीर तेजाजी मंदिर में मूर्ति क्षतिग्रस्त करने के विरोध में लोगों ने प्रदर्शन किया। सांगानेर थाना क्षेत्र में स्थित मंदिर के सामने लोगों ने करीब तीन घंटे टोंक रोड को जाम रखा।

पुलिस अधिकारियों के समझाइश के बाद भी जाम नहीं खुला तो पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर लोगों को मौके से हटा दिया है। दोपहर करीब डेढ़ बजे पुलिस ने जाम खुलवा दिया। इससे पहले शनिवार सुबह पुलिस को मंदिर की मूर्ति क्षतिग्रस्त होने की जानकारी मिली थी। स्थानीय लोगों ने बताया कि कुछ असामाजिक तत्वों ने मूर्ति तोड़ दी थी।

बंगाल के मालदा में भारी हिंसा, 34 गिरफ्तार

● इंटरनेट बंद, उपद्रवियों ने दुकानें व गाड़ियां तोड़ीं ● सामान भी लूटा, कलकत्ता हाईकोर्ट ने रिपोर्ट मांगी

मालदा (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के मोथाबाड़ी में 26 मार्च को दो गुटों के बीच हुई हिंसा मामले में 34 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया गया है। घटना के बाद इलाके में इंटरनेट बंद है। आर्म्ड और रैपिड एक्शन फोर्स की तीन कंपनियां तैनात की गई हैं। हिंसा को लेकर कलकत्ता हाईकोर्ट ने शुक्रवार को 3 अप्रैल तक एक्शन रिपोर्ट मांगी है।

कोर्ट ने कहा कि राज्य को सावधानी से काम करना चाहिए। साथ ही हिंसा प्रभावितों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। रिपोर्ट्स के मुताबिक 26 मार्च को मोथाबाड़ी मस्जिद में नमाज हो रही थी। इस दौरान वहां से एक जुलूस

गुजर रहा था। कुछ लोगों ने धार्मिक नारे लगाए। 27 मार्च को दूसरे समुदाय ने इसका विरोध किया। इस दौरान भीड़ ने दुकानों, घरों और गाड़ियों में तोड़फोड़ और लूट की। पुलिस ने लाठीचार्ज की, आंसू गैस छोड़े स्थानीय लोगों के मुताबिक 27 मार्च को विरोध प्रदर्शन के दौरान लोगों के हाथ में धार्मिक झंडे थे। नारेबाजी कर रहे लोग अचानक हिंसक हो गए और दुकानों, घरों में तोड़-फोड़ की, सामान लूटा और सड़कों पर खड़ी गाड़ियों में आग लगा दी। पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए लाठीचार्ज किया और आंसू गैस के गोले दागे। मालदा पुलिस ने लोगों से अपील की कि वे शांति बनाए रखें। सोशल मीडिया पर किसी भी तरह के अफवाह या गलत सूचना पर ध्यान न दें। कुछ लोगों के द्वारा जान बूझकर हिंसा भड़काने का प्रयास किया जा रहा है। अफवाह की कोई भी जानकारी दिखे या सुनें तो पुलिस को जानकारी दें।

शहीद तुकाराम का स्मारक बनाएगी फडणवीस सरकार

आतंकी कसाब को जिंदा पकड़ने में दिया था अपना बलिदान

मुंबई (एजेंसी)। साल 2008 में हुए मुंबई हमलों में मुंबई पुलिस के जवान शहीद तुकाराम ओंबले ने हमले के एक मात्र जिंदा आतंकी अजमल आमिर कसाब को पकड़ने में बेहद अहम भूमिका निभाई थी। कसाब लगातार उन पर गोलियां चला रहा था लेकिन ऐके 47 की गोलियां लगने के बावजूद तुकाराम ओबले ने उस दरिंदे को नहीं छोड़ा था,

नतीजा ये कि कसाब को जिंदा पकड़ा गया। तुकाराम ओंबले शहीद हो गए थे। महाराष्ट्र सरकार ने फैसला किया है कि अब उनके सम्मान में, उनके पैतृक गांव मे उनका मेमोरियल बनाया जाएगा। शहीद तुकाराम ओंबले को अपने सर्वोच्च बलिदान के लिए मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था। महाराष्ट्र सरकार ने बताया है कि शहीद ओंबले का स्मारक सतारा जिले में उनके पैतृक गांव केदांबे में बनाया जाएगा, जहां तुकाराम ओंबले का जन्म हुआ था।

एमपी के मंडला में बच्चे घर में हिंदू पर स्कूल में बन गए ईसाई

15 लड़कियां और 33 लड़कों का धर्म परिवर्तन, हॉस्टल के रिकॉर्ड में चौंकाने वाला खुलासा

मंडला (एजेंसी)। मंडला के एक स्कूल में धर्मांतरण का बड़ा खेल खुला है। समय समय पर एमपी से ऐसे मामले सामने आ रहे हैं, जिस पर सरकार सख्ती से काम कर रही है। इस बार मध्यप्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने अपनी जांच में खुलासा किया है। उन्हे पता चला कि साइन फॉर इंडिया स्कूल में 48 बच्चों को ईसाई धर्म की शिक्षा दी जा रही थी। बच्चों को उनके माता-पिता की अनुमति के बिना धार्मिक गतिविधियों में शामिल किया जा रहा था। आयोग को यह भी जानकारी मिली कि स्कूल बिना अनुमति के चलाया जा रहा था और बच्चों का ब्रेनवॉश किया जा रहा था। यह मामला बिछिया जनपद के साइन फॉर इंडिया स्कूल का है। जांच

में पता चला कि स्कूल में मंडला, ओडिशा और अनूपपुर के 48 बच्चे रह रहे हैं। इनमें 15 लड़कियां और 33 लड़के हैं। स्कूल से बड़ी मात्रा में धार्मिक किताबें जब्त की गई हैं। बाल संरक्षण आयोग को जानकारी मिली थी कि ओडिशा का ज्योति राज बिना अनुमति के स्कूल और छात्रावास चला रहा है। जब टीम ने बच्चों से बात की, तो उन्होंने बताया कि वे डॉक्टर और इंजीनियर नहीं, बल्कि पास्टर और सिस्टर बनना चाहते हैं। उन्हे ईसाई धर्म की शिक्षा इस हद तक दी जा रही थी कि वे धर्मांतरण के लिए आसानी से प्रेरित थे। बाल संरक्षण आयोग की सदस्य डॉक्टर निवेदिता शर्मा ने बताया कि स्कूल आवासीय स्कूल के रूप में चल रहा था। हॉस्टल में रह रहे 48 बच्चों के दस्तावेज पूरे नहीं मिले। स्कूल के दस्तावेज में बच्चे का धर्म हिंदू और जाति गोंड लिखी मिली। वहीं हॉस्टल के रिकॉर्ड में सभी बच्चों को ईसाई बताया गया है।

'अभिव्यक्ति' की स्वतंत्रता को लेकर फिर दिखाया आईना

● सुप्रीम कोर्ट ने इमरान प्रतापगढ़ी मामले को लेकर कह दी बड़ी बात

नई दिल्ली (एजेंसी)। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर देश की सर्वोच्च अदालत ने अहम टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता स्वस्थ और सभ्य समाज का अभिन्न अंग है, जिसके बिना सम्मानजनक जीवन जीना असंभव है। कोर्ट ने कहा कि नागरिकों के अभिव्यक्ति के अधिकार को तुच्छ और काल्पनिक आधारों पर कुचला नहीं जा सकता। शीर्ष कोर्ट ने गुजरात पुलिस की ओर से कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी के खिलाफ सोशल मीडिया पर 'ऐ खून के प्यासे बात सुनो' कविता पोस्ट करने के मामले में शुरू की गई आपराधिक कार्यवाही को खारिज कर दिया। एफआईआर आंख मूंदकर दर्ज नहीं हो।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों को नव संवत्सर, चेटीचंद और गुड़ी पड़वा की शुभकामनाएं दीं

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को नव संवत्सर, चेटीचंद और गुड़ी पड़वा की शुभकामनाएं दीं हैं। उन्होंने कहा कि ये पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं और समाज में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में विक्रमोत्सव-2025 का भव्य आयोजन 30 मार्च को गुड़ी पड़वा से प्रारंभ होगा।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विक्रमोत्सव का आयोजन युवा पीढ़ी को सम्राट विक्रमादित्य के सिद्धांतों से प्रेरणा लेने की सीख देगा। इसी दिन से जल गंगा अभियान भी प्रदेशभर में शुरू होगा, जो 3 महीने तक चलेगा। उन्होंने कहा कि विक्रमोत्सव यह आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और विक्रमादित्य के आदर्शों को आत्मसात करने की स्वर्णिम पहल है।

कहानी लेखन में सुरेश सौरभ सम्मानित

लखीमपुर खीरी। गोला गोकर्णनाथ खीरी अखिल भारतीय साहित्य परिषद,अवध प्रांत की जनपद लखीमपुर इकाई द्वारा वनतारा रिसॉर्ट गोला में वैचारिक संगोष्ठी व कहानी लेखन प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि डॉ. द्वारिका प्रसाद रस्तोगी की रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता वयोवृद्ध शिक्षक,गीतकार कवि बेनी राम अंजान ने की। कुटुंब विषयक/शीर्षक कहानी लेखन प्रतियोगिता में श्रेष्ठ कहानी लेखन के लिए वरिष्ठ वर्ग से लखीमपुर से श्रेष्ठ कहानीकार सुरेश सौरभ, तथा शशिकांत मिश्र 'शशि' को अंगवस्त्र,प्रतीक चिन्ह, सम्मान पत्र व माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया गया। जबकि कनिष्ठ वर्ग में कुमारी यशस्वी सिंह सुपुत्री रीतेश सिंह कक्षा बारह व कुमारी खुश्बू वर्मा सुपुत्री मेवालाल कक्षा ग्यारह राजेन्द्र गिरि मेमोरियल इंटर कॉलेज को सम्मानित किया गया । बेटियों को डॉ .प्रीति वर्मा व डॉ.स्मिता तिवारी ने प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र ,सम्मान पत्र व उपहार

देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन संस्था के जिलाध्यक्ष रमेश पांडे 'शिखर शलभ' ने किया उन्होंने कहा, जनपद खीरी के साहित्यकार सुरेश सौरभ ने कहानी और लघुकथा लेखन में वैश्विक पहचान बनाई है। गोष्ठी में प्रांतीय कार्यकारणी के सदस्य वेद प्रकाश अग्निहोत्री , श्रीकांत तिवारी 'कांत' संत कुमार बाजपेई 'संत' गेंदनलाल कनौजिया, ब्रजेश तिवारी, गज़लकार मुनेंद्र प्रताप सिंह, श्याम मोहन मिश्र सुधीर अवस्थी, रमाकांत चौधरी ने काव्य पाठ करते हुए विचार व्यक्त किये। सुरेश सौरभ ने कुटुंब आधारित अपनी कहानी 'औलाद के आंसू' का वाचन किया। विचार गोष्ठी में कुटुंब विषयक व्याख्यान भी दिए गए, जिसमें वक्ता सुधीर अवस्थी ने कहा कुटुंब ढाल है। वह रूमाल है जो अंतर्मन के आंसुओं को पोंछता है। रमाकांत चौधरी ने अंधेरे को आफताब बांटना चाहता हूं, सामाजिक संदर्भों में कविता का वाचन करके से समां बांध दिया। गोष्ठी में नगर के तमाम गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

नआईटीटीटीआर में नेत्रदान जागरूकता अभियान आयोजित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एम्स भोपाल के नेत्र रोग विभाग की नेत्र बैंक टीम ने 25 मार्च 2025 को राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) भोपाल द्वारा श्यामला हिल्स क्षेत्र, एनआईटीटीटीआर कैंपस में आयोजित मेगा हेल्थ केयर एक्टिविटीज में सक्रिय भागीदारी निभाई। एम्स भोपाल की टीम ने नेत्र रोग विभाग की प्रोफेसर और प्रमुख डॉ. भावना शर्मा की देखरेख में नेत्रदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें शिक्षा, परामर्श और दाता पंजीकरण शामिल थे। इस कार्यक्रम की मुख्य विशेषता थी 40 से अधिक लोगों को नेत्रदान के लिए परामर्श देना और संकल्प पत्र भरवाना। इस पहल का उद्देश्य नेत्रदान जागरूकता को बढ़ावा देना और लोगों को अपनी मृत्यु के बाद नेत्रदान का संकल्प लेने के लिए प्रेरित करना है। एम्स भोपाल की आई बैंक टीम लंबे समय से नेत्रदान को प्रोत्साहित करने और कॉर्नियल ट्रांसप्लांटेशन सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध रही है।

भारतीय चाणक्य ने लगाई लताड़ तो तिलमिलाया पाक

अल्पसंख्यकों को लेकर भारत को ही उल्टा देने लगा है ज्ञान

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार को लेकर भारत के विदेश मंत्री के बयान पर इस्लामाबाद को मिर्ची लग गई है। पाकिस्तान की तिलमिलाहट उसके विदेश मंत्रालय के बयान में सामने आई है, जिसमें उसने भारत को उसके अल्पसंख्यकों के मामले में न बोलने के लिए कहा है। पाकिस्तान की हिमाकत देखिए, उसने तो यह कह दिया कि भारत को अल्पसंख्यकों पर बोलने का अधिकार ही नहीं है। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय ने उल्टा भारत पर ही अल्पसंख्यकों के अधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगा दिया। शुक्रवार को भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे व्यवहार की आलोचना की थी।

भाजपा को जिताएं नहीं तो खत्म हो जाएगा हिंदुओं का अस्तित्व

मिथुन चक्रवर्ती बोले- बांग्लादेश तो ट्रेलर है, बंगाल में और बुरे हैं हाल

कोलकाता (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता मिथुन चक्रवर्ती ने पश्चिम बंगाल में हिंदू वोट को एकजुट करने की अपील करते हुए बांगलादेश का उल्लेख किया और कहा कि बांगलादेश ने केवल ट्रेलर दिखाया है, इसके बाद बंगाल में हिंदू बंगाली का अस्तित्व बच पाएगा या नहीं इस पर संदेह है। उन्होंने हिंदू वोटरों को इस बार भारी संख्या में मतदान करने की अपील करते हुए कहा कि यह हमारी अस्तित्व की लड़ाई है। मिथुन चक्रवर्ती ने कहा,आज भी 9 प्रतिशत हिंदू हमारे वोट नहीं देते। मैं चिल्लाकर कहता हूं, इस बार घरों से बाहर निकलें और भाजपा को वोट दें। बांगलादेश ने हमें सिर्फ ट्रेलर दिखाया है, इसके बाद बंगाल में हिंदू बंगाली रहेगा या नहीं, इस बारे में मुझे शक है। अगर इस बार हिंदू वोट नहीं करते तो आने वाले दिनों में हमें बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। मिथुन चक्रवर्ती के इस बयान पर तृणमूल कांग्रेस ने कड़ा विरोध जताया है। तृणमूल नेता जयप्रकाश मजूमदार ने कहा कि मिथुन चक्रवर्ती बांगलादेश का नाम लेकर पश्चिम बंगाल में अशांति फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कहा,क्या मिथुन चक्रवर्ती मुंबई में जाकर यह सब कह सकते हैं। अगर बांगलादेश का जिक्र करके राज्य में कोई अशांति पैदा करने की कोशिश होगी तो पश्चिम बंगाल के लोग उसे बर्दाश्त नहीं

करेंगे। पश्चिम बंगाल में बीजेपी ने हिंदू वोट को एकजुट करने के लिए कई दिन पहले ही प्रचार अभियान शुरू कर दिया है। कोलकाता और विभिन्न जिलों में हिंदू एकता का संदेश देते हुए पोस्टर लगाए गए हैं, जिनमें लिखा है हिंदू-हिंदू भाई-भाई। रामनवमी के त्योहार को लेकर भी बीजेपी ने अपनी गतिविधियां तेज कर दी हैं। बीजेपी नेता शुभेंदु अधिकारी ने भी रामनवमी को लेकर बयान दिया। उन्होंने कहा,हिंदू जाग गए हैं। अब रामनवमी बड़े धूमधाम से मनाई जाएगी, इसके बाद हनुमान जयंती भी मनाई जाएगी। शुभेंदु ने यह बयान बारुईपुर में हुई अपनी सभा में दिया। बीजेपी नेता दिलीप घोष ने भी रामनवमी के मौके पर पुलिस से टकराव की धमकी दी। उन्होंने कहा,अगर पुलिस ने हमारे रामनवमी के जुलूस पर रोक लगाई, तो हम थाने घेर लेंगे। रामनवमी की शोभायात्रा में युवाओं को लाठी लेकर भागने का अधिकार होगा। जहां भी पुलिस रोक लगाएगी, हम थाने का घेराव करेंगे। उन्होंने कहा कि इस बार एक करोड़ से ज्यादा हिंदू सड़कों पर उतरेंगे। रामनवमी के प्रचार को लेकर पश्चिम बंगाल में अब राजनीतिक माहौल गर्मा गया है। हिदुत्ववादी संगठनों ने 6 अप्रैल को रैली आयोजित करने का आह्वान किया है।

आज गुड़ी-पड़वा पर उज्जैन के आसमान में 1000 ड्रोन का शो

भगवान महाकाल और श्रीकृष्ण की बनेगी आकृति सिंहस्थ कुंभ 2028 एंथम सॉन्ग होगा लॉन्च

उज्जैन (एजेंसी)। उज्जैन में 30 मार्च को गुड़ी पड़वा के अवसर पर शिप्रा नदी के रामघाट पर 1000 ड्रोन के जरिए भगवान महाकाल, भगवान श्रीकृष्ण और सम्राट विक्रमादित्य की भव्य आकृतियां बनाई जाएंगी। मध्यप्रदेश में यह पहला अवसर होगा जब इतनी बड़ी संख्या में ड्रोन का फॉर्मेशन लोगों को देखने को मिलेगा। इस दौरान आकाश में ही आगामी सिंहस्थ 2028 के लिए तैयार किए गए एंथम सॉन्ग को भी रिलीज किया जाएगा। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा आयोजित विक्रमोत्सव के तहत गुड़ी पड़वा के अवसर पर वर्ष प्रतिपदा के दिन उज्जयिनी गौरव दिवस और सृष्टि आरंभ दिवस मनाया जाएगा। इस विशेष मौके पर महाकाल नगरी के आकाश में एक साथ 1,000 ड्रोन उड़ाए जाएंगे।रात में होने वाला 15 मिनट का भव्य ड्रोन शो अद्भुत नज़ारा पेश करेगा, जिसमें भगवान शिव की आकृति और उनसे जुड़े प्रतीक चिह्न रंग-बिरंगे स्वरूप में नजर आएंगे। शो के दौरान ड्रोन महाकाल, सम्राट विक्रमादित्य का पोर्ट्रेट, माता शिप्रा, ब्रह्मांड, कृष्ण-सुदामा, सिंहस्थ 2028 का लोगो, नववर्ष की बधाई, वैदिक घड़ी और महाकाल की आरती के मनमोहक दृश्य बनाएंगे। पूरे शो के दौरान फीमेल वॉइस ओवर में माता शिप्रा की कथा सुनाई जाएगी।

28 आईआईटीयन्स सहित 44 विशेषज्ञों की टीम देगी प्रस्तुति

इवेंट डायरेक्टर अधिराज ललित ने बताया कि इस ड्रोन शो का आयोजन बोटलेब और एकमे मीडिया कंपनी, दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इस कंपनी की स्थापना 28 आईआईटी के छात्रों ने एक स्टार्टअप के रूप में की थी, जो अब पेशेवर रूप से ड्रोन शो आयोजित कर रहे हैं। यह टीम अब तक खेलो इंडिया, ट-20, हाल ही में हुए आईफा अवार्ड्स और प्रयागराज कुंभ जैसे प्रतिष्ठित आयोजनों में ड्रोन फॉर्मेशन की शानदार प्रस्तुतियां दे चुकी है। टीम पहले ही उज्जैन पहुंच चुकी है और बीते दो दिनों से आसमान में विभिन्न ड्रोन फॉर्मेशन का ट्रायल कर रही है, ताकि मुख्य आयोजन में अद्भुत नज़ारा पेश किया जा सके।

सिंहस्थ कुंभ 2028 के लिए बना एंथम सॉन्ग

विक्रमादित्य शोध संस्थान के निदेशक श्रीराम तिवारी ने बताया कि सिंहस्थ कुंभ 2028 की तैयारियां उज्जैन में शुरू हो गई हैं। इस महाकुंभ के लिए एक विशेष एंथम सॉन्ग तैयार किया गया है, जिसे प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर ने अपनी आवाज़ दी है, जबकि इसका संगीत आलोक श्रीवास्तव ने तैयार किया है। ढाई मिनट के इस एंथम सॉन्ग को भव्य तरीके से ड्रोन शो के माध्यम से लॉन्च किया जाएगा।

हरसिद्ध मंदिर के ऊपर उड़ेंगे ड्रोन

प्रोडक्शन हेड कृष्णा बनर्जी ने बताया कि 1000 ड्रोन को एक साथ बालाजी गार्डन से उड़ाया जाएगा। ये ड्रोन हरसिद्ध मंदिर के ऊपर अलग-अलग आकृतियां बनाएंगे, जिन्हें रामघाट से लेकर दत्त अखाड़ा घाट और बड़नगर ब्रिज तक से देखा जा सकेगा। ड्रोन में सेवार्म टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है, जिससे ये एक-दूसरे से टकराए बिना समन्वित रूप से उड़ान भरेंगे और एक ही रिमोट से संचालित किए जाएंगे। सभी ड्रोन अपनी निर्धारित दूरी बनाए रखेंगे और निर्धारित क्रम में एक साथ नीचे उतरेंगे। इस पूरी प्रक्रिया के पायलट सुदीप होंगे। विक्रमादित्य शोध संस्थान के निदेशक श्रीराम तिवारी ने बताया कि, इस ड्रोन शो में उज्जैन के गौरवशाली इतिहास के विभिन्न आयामों को शामिल किया गया है।

पुराने टर्मिनल से नई उड़ानों की तैयारी

45 करोड़ रूपए की लागत से हो रहा नवीनीकरण; यात्री सुविधा बढ़ेगी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के देवी अहिल्याबाई होलकर एयरपोर्ट के पुराने टर्मिनल का नवीनीकरण कार्य तेजी से जारी है। लगभग 45 करोड़ रुपए की लागत से हो रहा यह कार्य जुलाई तक पूरा होने की उम्मीद है। इस टर्मिनल से शारजाह की अंतरराष्ट्रीय उड़ान और छोटे एटीआर विमानों का संचालन किया जाएगा। वर्तमान में मुख्य टर्मिनल से प्रति सप्ताह 100 से अधिक उड़ानें संचालित हो रही हैं, जिससे पीक आवर्स में यहां भीड़ बढ़ने लगी है। पुराने टर्मिनल को दोबारा शुरू करने से इस दबाव को कम करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, यहां एक इमिग्रेशन ऑफिस भी स्थापित किया गया है।

टर्मिनल का संचालन शुरू करने से पहले सुरक्षा संबंधी औपचारिकताएं पूरी की जाएंगी। इसके बाद, दोनों टर्मिनल से उड़ानों का संचालन होने पर इंदौर एयरपोर्ट से प्रति घंटे 2500 यात्री यात्रा कर सकेंगे, जो वर्तमान की तुलना में 1000 अधिक होंगे। इससे नए टर्मिनल पर यात्री भार लगभग एक तिहाई कम हो जाएगा, जिससे नई उड़ानों के संचालन की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। शारजाह की अंतरराष्ट्रीय उड़ान सप्ताह में चार दिन पुराने टर्मिनल से संचालित होगी, जबकि अन्य दिनों में घरेलू उड़ानें चलाई जाएंगी। साथ ही, नए

टर्मिनल में बदलाव कर उसके अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र को घरेलू उड़ानों के लिए उपयोग में लाया जाएगा। इंदौर एयरपोर्ट से वर्तमान में 85 से 90 उड़ानें रोजाना संचालित होती हैं, जिनमें से 34 से 36 उड़ानें एटीआर विमानों की होती हैं और छह उड़ानें अंतरराष्ट्रीय होती हैं। पुराने टर्मिनल से इन उड़ानों का संचालन शुरू होने पर नए टर्मिनल पर 36 उड़ानों का भार कम होगा, जिससे यात्री सुविधाएं बेहतर होंगी। साथ ही, पार्किंग और यातायात प्रबंधन में भी सुधार होगा। हालांकि, पुराने टर्मिनल में एयरोब्रिज की सुविधा नहीं होगी, जिससे अंतरराष्ट्रीय यात्रियों को बस या पैदल विमान तक जाना होगा। छोटे विमानों के लिए एयरोब्रिज की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के यात्रियों को सीढ़ियों का उपयोग करना पड़ सकता है।

क्लीन एयर प्रोग्राम का दिखने लगा असर

एक्यूआई घटकर 79 हुआ, पीएम-2.5 भी 47 से 44 पर पहुंचा

इंदौर (एजेंसी)। शहर में चार साल से चल रहे क्लीन एयर प्रोग्राम का असर दिखने लगा है। पिछले साल (2023-24) में जो एक्यूआई 102 था, वह इस वर्ष (2024-25) में घटकर 79 पर आ गया है। वहीं दो साल पहले (2022-23) पीएम 10 का स्तर 102 था जो इस साल (2024-25) में 88 तक गिर गया है। अब हमारा अगला लक्ष्य इसे 60 से कम लाना है ताकि हम राष्ट्रीय मानक के स्तर पर आ जाएं। पर्यावरण मंत्रालय के अधिकारियों ने शुक्रवार को सिटी बस ऑफिस में हुई समीक्षा बैठक में निगम और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अफसरों के साथ चर्चा की। निगमायुक्त शिवम वर्मा ने पर्यावरण मंत्रालय के नरेश पाल गंगवार और एन. सुब्रह्मण्यम को क्लीन एयर कैटलिस्ट प्रोजेक्ट और अन्य प्रयासों की जानकारी दी।

हिंदू नववर्ष पर खुला रहेगा इंदौर का सराफा बाजार

30 मार्च को रविवार की छुट्टी होने पर भी खुली रहेंगी दुकानें

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा और हिंदू नववर्ष के अवसर पर सराफा बाजार विशेष रूप से खुला रहेगा। इंदौर चांदी-सोना जवाहरात व्यापारी एसोसिएशन ने यह जानकारी दी है। एसोसिएशन के अध्यक्ष हुकम सोनी, बसंत सोनी और अजय लाहोटी ने बताया कि 30 मार्च को रविवार का दिन होने के बावजूद सभी दुकानें खुली रहेंगी। यह निर्णय विक्रम संवत् 2082 के नववर्ष के उपलक्ष्य में लिया गया है। इस दिन गुड़ी पड़वा और चेटीचंड का त्योहार भी है। सभी सराफा व्यापारी अपनी दुकानें खोलकर व्यापार करेंगे। इस तरह बाजार में नूतन वर्ष की अगवानी हर्षोल्लास के साथ की जाएगी।

8वीं बोर्ड में इंदौर संभाग प्रदेश में अव्वल

इंदौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड पैटर्न परीक्षाओं के परिणाम शुक्रवार दोपहर 1 बजे घोषित किए गए। इस वर्ष कक्षा 5वीं का परीक्षा परिणाम 92.70त्न और कक्षा 8वीं का 90.02 प्रतिशत रहा। कक्षा 5वीं में इंदौर संभाग ने 94 प्रतिशत परिणाम के साथ प्रदेश में चौथा स्थान हासिल किया, जबकि कक्षा 8वीं में 93.47 प्रतिशत परिणाम के साथ प्रथम स्थान पर रहा। हालांकि, जिलेवार प्रदर्शन में इंदौर दोनों ही कक्षाओं के टॉप 10 में स्थान नहीं बना सका।

एनएचएआई कर्मचारी सुसाइड में प्रोफेसर पत्नी सहित तीन पर मुकदमा दर्ज

शादी का सूट पहनकर ससुराल से लौटने के बाद लगाई थी फांसी

इंदौर (एजेंसी)। लसूड़िया पुलिस ने एनएचएआई कर्मचारी के सुसाइड मामले में पत्नी सहित तीन लोगों पर एफआईआर दर्ज की है। 26 सितंबर की रात में अनुराग धारसिया ने शादी का सूट पहनकर सुसाइड कर लिया था। जान देने के पहले उसने प्रोफेसर पत्नी तामश्री को कॉल किया था। पत्नी के दोस्त ने अनुराग की बहन को जानकारी दी थी। मामले में अनुराग के परिवार के लोगों ने आरोप लगाए थे। पुलिस अब जल्द सभी की गिरफ्तारी करेगी। लसूड़िया पुलिस ने अनुराग पुत्र बद्रीलाल धारसिया निवासी डी स्लाईस स्कीम नंबर 78 के मौत के मामले में ससुर लीलाधर सोनारतिया निवासी महेश विहार नानाखेड़ा, साला कच्छू उर्फ आंनद और पत्नी तमोश्री को आरोपी बनाया है। सभी पर आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में केस दर्ज किया गया है। पुलिस ने अनुराग की मौत के

बाद उसका मोबाइल चेक किया। जिसमें उसने एक वीडियो रिकार्ड किया था। इस वीडियो में पत्नी और ससुराल वालो पर प्रताड़ित करने को लेकर आरोप लगाए थे। पुलिस ने इस मामले में छह माह से ज्यादा समय तक जांच की। सभी के बयान के बाद उन्हें आरोपी बनाया गया था।

उज्जैन महिला थाने बुलाकर किया प्रताड़ित- अनुराग भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण में कर्मचारी के पद पर था। घटना के दिन वह अपने ससुराल उज्जैन गया। यहां से वापस आया। सीधे अपने कमरे में चले गया। इसके बाद पत्नी तामश्री को कॉल किया। उसने बताया कि वह गलत कदम उठाने जा रहा है। पत्नी ने घबराहट में जानकारी अपनी दोस्त को दी। फ्रेंड ने अनुराग की बहन को कॉल किया। इस दौरान बहन ने अनुराग के बड़े भाई को बात बताई। अजय जब तक कमरे में पहुंचा तो अनुराग फंदे पर लटका हुआ था।

प्रोफेसर थी अनुराग की पत्नी

अनुराग की शादी 21 जून 2021 में हुई। पत्नी तामश्री एमटेक तक पढ़ी थी। इसके बाद उसने एलएनसीटी कॉलेज में जॉब की। दो साल बाद मार्च 2023 में वह अनुराग के साथ केदारनाथ गई। यहां से आने के बाद वह उज्जैन चली गई। लेकिन इसके बाद इंदौर नही आई। बाद में उसने 25 सितंबर को कोर्ट का नोटिस अनुराग को भेजा। वहीं महिला थाने में इसकी शिकायत कर दी। 26 सितंबर को महिला थाने में अनुराग को तलब किया गया था। इस मामले में उज्जैन महिला थाने की तत्कालीन टीआई मधुबाला राठौर ने भी तामश्री द्वारा पति अनुराग की शिकायत की पुष्टि की थी।

कृषि कॉलेज डीन को हटाने की मांग पर कैंडल-मार्च

इंदौर (एजेंसी)। कृषि कॉलेज के स्टूडेंट्स डीन को हटाने की मांग को लेकर पिछले कुछ दिनों से धरना प्रदर्शन कर रहे है। वे कैंडल मार्च निकाला। बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स कृषि कॉलेज से लेकर रीगल चौराहे तक पैदल कैंडल मार्च निकाला।झ पिछले कुछ दिनों से शासकीय कृषि कॉलेज के स्टूडेंट्स डीन प्रो.भरत सिंह को हटाने की मांग कर रहे है। इस मांग को लेकर वे कॉलेज के गेट पर धरना प्रदर्शन कर रहे है। पिछले दिनों इस प्रदर्शन में नेशनल एजुकेटेड यूथ यूनियन के राधे जाट भी शामिल हो गए। राधे जाट भी स्टूडेंट्स के साथ धरने पर है।

पुलिस से की थी एफआईआर की मांग

बुधवार को राधे जाट के धरना प्रदर्शन में शामिल होने के बाद तिलक नगर पुलिस ने राधे जाट के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली थी। इसके बाद स्टूडेंट्स ने तिलक नगर थाने का घेराव कर दिया था। स्टूडेंट्स ने पुलिस अधिकारियों को ज्ञापन सौंपकर मांग की थी कि कॉलेज के डीन के खिलाफ भी एफआईआर की जाए।

इंदौर में सफाई और विकास को मिलेगी रफ्तार

3.42 करोड़ की 11 जेसीबी मिले, हर जोन पर रहेगी उपलब्ध

इंदौर (एजेंसी)। नगर निगम इंदौर ने शहर में स्वच्छता और विकास कार्यों को और अधिक गति देने के लिए शुक्रवार को 3.42 करोड़ रुपए की लागत से 11 जेसीबी वाहनों की सेवा का शुभारंभ मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने किया। इस अवसर पर एमआईसी सदस्य राजेंद्र राठौर, नंदकिशोर पहाड़िया, निरंजन सिंह चौहान, अश्विनी शुक्ल, अपर आयुक्त अभय राजनगांवकर, मनोज पाठक, वर्कशॉप प्रभारी मनीष पांडे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। मेयर भार्गव ने कहा कि ये जेसीबी वाहन शहर में सफाई व्यवस्था, सड़कों के रखरखाव, नालों की सफाई और अन्य विकास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। नगर निगम लगातार स्वच्छता और बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए आधुनिक उपकरणों की संख्या बढ़ा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि इन नए वाहनों की मदद से शहर के विभिन्न वार्डों और उद्यानों में कार्यों को गति मिलेगी।

इंदौर-नई दिल्ली के लिए चली स्पेशल ट्रेन

इंदौर से होगी रवाना, सोमवार को भी चलेगी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर-दिल्ली के बीच चल रही ट्रेनों में लंबी वेटिंग को कम करने के लिए रतलाम मंडल शनिवार और सोमवार को स्पेशल ट्रेन चला रहा। नई दिल्ली-इंदौर स्पेशल सुपरफास्ट एक्सप्रेस (04092) शुक्रवार को नई दिल्ली से दोपहर 3.30 बजे रवाना हुई थी जो की आज यानी शनिवार सुबह 6.10 बजे इंदौर पहुंची। यह ट्रेन वापसी में इंदौर-नई दिल्ली स्पेशल सुपरफास्ट एक्सप्रेस (04091) शनिवार यानी आज दोपहर 11.45 बजे रवाना होगी और देर रात 2.30 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। इंदौर से रवाना होने के बाद यह ट्रेन अब सोमवार को इंदौर से

रवाना होगी। रेलवे से मिली जानकारी के अनुसार इंदौर से आज दिल्ली पहुंचने वाली ट्रेन कल दोपहर 3.30 बजे दिल्ली से दोबारा इंदौर के लिए रवाना होगी। यह ट्रेन नागदा स्टेशन पर रात 2.10 बजे और रतलाम स्टेशन पर 3.40 बजे पहुंचेगी। जिसके बाद यह ट्रेन सोमवार को सुबह 6.10 बजे इंदौर जंक्शन पहुंचेगी। इसी तरह यह ट्रेन वापसी में इंदौर से सुबह 11.45 बजे रवाना होगी। यह ट्रेन रतलाम 2.10 बजे और नागदा 3.15 बजे पहुंचेगी। अगले दिन यह ट्रेन रात 2.30 बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचेगी। ट्रेन का दोनों दिशाओं में मथुरा, कोटा, नागदा और रतलाम स्टेशनों पर ठहराव दिया गया है। ट्रेन में सेकंड एसी कम थर्ड एसी, स्लीपर और सामान्य श्रेणी कोच रहेंगे। सोमवार को भी स्पेशल ट्रेन का यही समय रहेगा।

इंदौर से जयपुर के लिए नई ट्रेन- रेलवे ने इंदौर से राजस्थान जाने वाले यात्रियों को नई सौगात देते हुए इंदौर-जयपुर स्पेशल ट्रेन शुरू करने की घोषणा की है। यह ट्रेन सप्ताह में तीन दिन सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को संचालित होगी।

नए संवत्सर में राजा और मंत्री दोनों सूर्य

शंकराचार्य मठ इंदौर के अधिष्ठाता डॉ. गिरीशानंदजी ने बताया- घोड़े पर आएगा सिद्धार्थ नामक कालयुक्त नया संवत्सर

इंदौर (एजेंसी)। ऐसा कहा जाता है कि जो शत्रु न कर सके, वह ग्रह कर देते हैं। ग्रह ही व्यक्ति को राजपाट दिलाते हैं, ग्रहों के द्वारा ही राजपाट छिन भी जाता है, ग्रह समय को अनुकूल भी बना देते हैं और प्रतिकूल भी। ज्योतिष, ज्योति से लिया गया है। ज्योति का मतलब होता है देखना। भूत, भविष्य, वर्तमान को तो केवल ब्रह्माजी के अतिरिक्त संसार में कोई भी नहीं बता सकता, क्योंकि वे ही सृष्टि के सृजन कर्ता हैं। हम तो केवल ग्रहों के आधार पर फलाफल का अनुमान लगा सकते हैं। संभावना बता सकते हैं। यह नहीं बता सकते कि ऐसा होगा ही। मंगलमय नए वर्ष विक्रम संवत् 2082 का आगमन रविवार 30 मार्च चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हो रहा है। इस कालयुक्त संवत्सर का नाम सिद्धार्थ रहेगा और इसका आगमन घोड़े पर होगा। एरोड्रम क्षेत्र में दिलीप नगर नैनोद स्थित शंकराचार्य मठ इंदौर के अधिष्ठाता ब्रह्मचारी डॉ. गिरीशानंदजी महाराज ने अपने नित्य प्रवचन में शनिवार को यह बात कही।

छह विभाग पाप और चार शुभ ग्रहों को मिले

महाराजश्री ने बताया कि पूरे वर्ष पूजन संकल्प आदि में कालयुक्त संवत्सर सिद्धार्थ बोला जाएगा। इस वर्ष का राजा सूर्य है। मंत्री

भी सूर्य है। इसलिए देश के प्रशासनिक अधिकारियों का संबंध आपस में अनुकूल होगा। वर्ष की प्रवेश कुंडली में वर्ष के पदाधिकारियों में छह विभाग पाप ग्रहों को मिले हैं। और मात्र चार विभाग शुभ ग्रहों को मिले हैं। इसलिए भारत ही नहीं वरन समूचे विश्व के लिए यह समय परेशानियों से भरा रहेगा। प्राकृतिक आपदाएं आएंगी, लेकिन फसल अच्छी होने से किसान खुश रहेंगे। परमात्मा की आराधना करने से विपरीत समय भी पक्ष में हो सकते हैं।

ग्रहों ने भगवान शंकर को भी नहीं छोड़ा

डॉ. गिरीशानंदजी महाराज ने बताया कि ग्रहों ने शंकरजी को भी नहीं छोड़ा था। शंकरजी पर जब शनि की दशा आई, शनि ने पूछा प्रभु अब हम क्या करें? भगवान शंकर ने कहा कि जो नियम बनाए गए हैं, उनका तुम पालन करो, चाहे कोई भी हो। इसलिए भगवान शंकर को कुछ समय पानी के अंदर रहना पड़ा था। एक बार भस्मासुर ने मुर्दे की भस्म चढ़ा-चढ़ाकर भगवान शंकर को प्रसन्न कर लिया। भगवान ने कहा जो वरदान मांगना हो मांगो। भस्मासुर ने कहा महादेव आप त्रिकालदर्शी हैं, आपकी पूजा के लिए हमें रोज मुर्दे की भस्म ढूंढना पड़ती है। इसलिए आप हमें ऐसा वरदान दें कि मैं जिस पर हाथ रखूं वह भस्म हो जाए। भगवान शंकर ने वरदान दे दिया। भस्मासुर की बुद्धि खराब हुई तो वह शंकरजी के ऊपर ही हाथ रखने के लिए दौड़ गया। परिणाम यह हुआ कि उससे बचने के लिए भगवान शिव को कुछ समय पानी में छुपना पड़ा। इतने में भगवान विष्णु आ गए और मोहिनी रूप धारण करके अपनी माया से भस्मासुर का हाथ उसके सिर पर ही रखवा दिया। इससे भस्मासुर भस्म हो गया। स्कंद पुराण और भागवत में लिखा है कि जो भी व्यक्ति निरंतर 12 वर्ष तक विष्णु सहस्रनाम का पाठ कर लेता है उसके विपरीत ग्रह भी पक्ष में हो जाते हैं।

मठ में अखंड मनोकामना ज्योति कलश की स्थापना होगी

शंकराचार्य मठ में 30 मार्च से 6 अप्रैल तक अधिष्ठाता डॉ. गिरीशानंदजी महाराज के सान्निध्य में चैत्र नवरात्रि मनाई जाएगी। इस वर्ष भी अखंड मनोकामना ज्योति कलश की स्थापना कर प्रतिपदा से राम नवमी तक विभिन्न उपचारों से मां भगवती की आराधना की जाएगी। इस अवसर पर नित्य दुर्गा सप्तशती का पाठ, विशेष पूजन-अर्चन एवं प्रवचन होंगे।

शहर में लगे 5 लाख स्मार्ट मीटर

कंपनी क्षेत्र में उज्जैन जिले में दूसरा, 1.12 लाख मीटर लगे

इंदौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, इंदौर केंद्र और राज्य शासन की प्राथमिकता वाली स्मार्ट मीटर परियोजना का अत्यंत तेजी और प्रभावी रूप से संचालन कर रही है। शनिवार को इंदौर शहर में स्मार्ट मीटर स्थापना का आंकड़ा पांच लाख पार कर गया। इस उपलब्धि पर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने पश्चिम क्षेत्र कंपनी के कार्मिकों को बधाई दी है।

गुणवत्ता के साथ स्मार्ट मीटर परियोजना का संचालन

म.प्र. पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, इंदौर के प्रबंध निदेशक अनूप कुमार सिंह ने बताया कि स्मार्ट मीटर सेल के साथ ही जिलों की टीमें स्मार्ट मीटर परियोजना का अत्यंत गंभीरता से संचालन कर रही हैं। वे गुणवत्तापूर्ण मीटर स्थापना, सटीक रीडिंग, डाटा संग्रहण और त्रुटिरहित बिलिंग जैसे कार्य कर रही हैं। सिंह ने बताया कि उपभोक्ता सेवाओं में वृद्धि करते हुए स्मार्ट मीटरीकरण तेजी से जारी है। इसी के तहत इंदौर

शहर में पांच लाख पांच सौ स्मार्ट मीटर लग चुके हैं। यह संख्या मध्यप्रदेश के किसी भी शहर में सर्वाधिक है।

ढाई से तीन हजार स्मार्ट मीटर प्रतिदिन लगाए जा रहे हैं

इंदौर के बाद, कंपनी क्षेत्र के उज्जैन जिले में 1.12 लाख और रतलाम जिले में 1.10 लाख स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं। अन्य जिलों में 10 हजार से 55 हजार स्मार्ट मीटर स्थापित कर दिए गए हैं। कंपनी क्षेत्र में 11.46 लाख स्मार्ट मीटरों की स्थापना पूर्ण हो चुकी है। वर्तमान में ढाई से तीन हजार स्मार्ट मीटर प्रतिदिन लगाए जा रहे हैं। प्रबंध निदेशक सिंह ने बताया कि ये स्मार्ट मीटर रूफटॉप सोलर नेट मीटर और टाइम ऑफ द डे बिल प्रणाली में भी कारगर साबित हो रहे हैं और उपभोक्ताओं को रियायतें दिलाने में सहायक हैं।

नव सवंत्सर विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी
लेखक स्तंभकार हैं।

हिंदू पंचांग और कालगणना

छि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि अर्थात् तीस मार्च 2025, रविवार को नया हिंदू वर्ष प्रारंभ हो गया है। हिंदू वर्ष का आरंभ सूर्योदय से माना जाता है, न कि रात बारह बजे से। हिंदुओं के दिनों की अवधि भी सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक होती है।

लगभग साढ़े चार अरब साल पुरानी पृथ्वी पर जब तीन लाख साल पहले हम मानव यानी होमो सेपियंस का प्रादुर्भाव हुआ होगा तब चाँद, सूरज, ग्रह, नक्षत्र सब मौजूद थे। आसमान में झिलमिलाते चमकते सितारे उसके मन में जिज्ञासा जगाते होंगे। इंसान ने अनवरत चलनेवाले दिन और रात के क्रम को देखा होगा। विवेक के इस्तेमाल ने अंधेरे उजाले की पुनरावृत्ति देखकर समय और उसके मापदंड की अवधारणा को जन्म दिया होगा। सूर्योदय के साथ आँख खुलने पर दिन और सूर्यास्त होने पर नींद के बोझ से आँखें बन्द होने को रात कहा गया। दिन और रात को मिलाकर अहोरात्र संज्ञा बनी। समय बीतने के साथ समय की गणना में सुधार होते रहे। पृथ्वी के सभी हिस्सों में मनुष्यों ने अपने अपने तरीके से कालगणना की पद्धतियां विकसित कीं। भारतीय उपमहाद्वीप में अति प्राचीन काल से खगोलीय गतिविधियों पर शोध होता रहा है। काल को समझना ऐसी ही खोजों का एक विषय है।

भारतवर्ष में समय के मापदंड तय किए गए। दिनों के समूह बने। सप्ताह, पखवाड़ा, मास और संवत्सर का निर्धारण हुआ। दिन को साठ घटी में, घटी को साठ पल और पल को साठ विपल में बाँटा गया। एक विपल में साठ अनुपल होते हैं। चूँकि धरती को चंद्र और सूर्य की स्थितियाँ सबसे अधिक प्रभावित करती हैं इसलिए इन दोनों खगोलीय पिंडों के साथ अन्य ग्रहों की स्थिति को कालगणना हेतु ध्यान में रखा गया। कालांतर में हमारे मनीषियों ने समय को नापने की ऐसी पद्धति का अविष्कार किया जो वैज्ञानिक होने के साथ निर्दोष भी है।

समय मापन, मुहूर्त आदि की जानकारी के लिए पंचांग बनाए गए। जैसा कि नाम से स्पष्ट है, पंचांग में पांच बातों का उल्लेख होता है, वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण। वार सात होते हैं, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार। सभी वारों के नाम हमारे सौरमंडल के उन ग्रहों से संबंधित हैं जो धरती को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। दुनिया में यही साप्ताहिक व्यवस्था मान्य है। वैदिक परंपरा के विद्वानों ने दिनों के नाम निर्धारण में तार्किकता बरती। सूर्योदय के समय जिस ग्रह की होरा होती है, वार का नाम उसी ग्रह पर रखा गया है। पृथ्वी से ग्रहों की दूरी के आधार पर सातों ग्रहों का क्रम चंद्र, बुध, शुक्र, रवि, मंगल, बृहस्पति और शनि बनता है। इसी क्रम में सभी ग्रहों की बारी बारी से एक-एक घंटे की होरा आती है। सूर्योदय के समय जिस ग्रह की होरा होती है, वार का वही नाम होता है। ग्रह सात हैं इसलिए दिन भी सात होते हैं। राहु और केतु का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता इसलिए इन्हें छाया ग्रह कहते हैं। अपनी धुरी पर घूमती हुई पृथ्वी सूर्य के चक्कर लगाती है और चंद्रमा धरती की परिक्रमा करता है। सूर्य और चंद्रमा के परिक्रमा पथों को आपस में काटने के काल्पनिक बिंदु पर राहु और उसके ठीक सामने एक सौ अस्सी डिग्री पर केतु की अवधारणा की गई है। यह बिंदु शेष ग्रहों की चाल के विपरीत घूमते हैं इसलिए ज्योतिष शास्त्र में राहु और केतु की गति हमेशा वक्री मानी जाती है।

भारतीय पंचांग में चंद्र वर्ष को संवत कहते हैं जो लगभग 354 दिनों का होता है। दुनिया ने प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर में लगभग 365 दिनों का एक सौर वर्ष होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर चौबीस घंटे या साठ घटी में एक चक्कर पूरा करती है जिससे दिन और रात बनते हैं। चंद्रमा धरती का एक चक्कर लगभग सत्ताइस दिन में लगाता है, जो यथार्थ में दोनों की अपनी गतियों के कारण साढ़े उनतीस दिनों में पूरा होता है। इस अवधि को चंद मास कहते हैं।सौर वर्ष पूरा होने से दस दिन पहले चंद्रमा पृथ्वी की बारह परिक्रमा कर लेता है। हमारे विद्वानों ने इन्हीं बारह चंद्र मासों को संवत्सर माना है। चूँकि एक संवत्सर बीतने के बाद भी सौर वर्ष के दस दिन शेष रहते हैं इसलिए गणना की शुद्धता बनाए रखने के लिए प्रत्येक तीसरे वर्ष संवत्सर में एक चंद्र मास और जोड़ दिया जाता है। इसे अधिक मास कहते हैं। सूर्य हर महीने अपनी राशि बदलता है जिसे संक्रांति कहते हैं। जिस चंद्र मास में सूर्य की संक्रांति नहीं होती, वह अधिक मास होता है। यह संयोग हर तीसरे साल बनता है।

चंद्रमा के जिस हिस्से से सूर्य की किरणें परावर्तित होकर पृथ्वी पर पड़ती हैं, वह हमें चमकदार दिखाई देता है। चूँकि चंद्रमा धरती के चारों तरफ घूमता हुआ सूर्य के पास और दूर होता रहता है इसलिए उसकी अनेक छोटी बड़ी छवियाँ हमें नजर आया करती हैं। जब पृथ्वी से चंद्रमा और सूर्य एक लाइन में आ जाते हैं तो चंद्रमा के किसी भी हिस्से से रोशनी परावर्तित होकर हमारी आँखों तक नहीं पहुँचती। इस अवस्था को अमावस्या कहते हैं। जब चंद्रमा सूर्य से अधिकतम दूरी पर होता है तब धरती की ओर पड़नेवाली उसकी पूरी सतह सूर्य की रोशनी से प्रकाशित दिखाई देती है। यही पूर्णिमा है। अमावस्या के बाद सूर्य से दूर जाते हुए चाँद की उज्ज्वल छवि में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगती है। इसे शुक्लपक्ष कहते हैं। लगभग पंद्रह दिन बाद पूर्णिमा आती है। इसके उपरांत चंद्रमा सूर्य के नजदीक जाने लगता है जिससे उसकी चमकदार इमेज घटने लगती है। यह कृष्णपक्ष है। यह क्रम एक पखवाड़े तक चलता हुआ अमावस्या पर समाप्त होता है। सूर्य से चंद्रमा की दूरी को तिथियों में बांटा गया है। चंद्रमा की गोलाकार परिक्रमा 360 डिग्री की होती है जो लगभग साढ़े उनतीस दिनों में पूरी होती है। अर्थात चंद्रमा एक दिन में लगभग बारह डिग्री चलता है। यह बारह डिग्री ही एक तिथि का मान होता है। तिथि की अवधि उन्नीस से छब्बीस घंटों की हो सकती है।

सूर्य और चंद्रमा के संयोग से योग बनता है। तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं।

आकाश में हमें असंख्य तारे दिखाई देते हैं। ऋषि मुनियों ने तारों के सत्ताईस समूहों को खोजा जिनका असर धरती और उसके जीवों पर पड़ता है। इन्हें नक्षत्र कहा गया। यह नक्षत्र धरती के चारों ओर 360 डिग्री के गोलाकार पथ पर अवस्थित हैं। इस पूरे क्षेत्र को बारह बराबर भागों में बाँटा गया। प्रत्येक का हिस्सा तीस डिग्री का हुआ। यही बारह राशियाँ हैं। एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं। सवा दो की संख्या की सुगम गणना के लिए नक्षत्र के चार चरण किए गए। सत्ताईस नक्षत्रों के 108 चरण हुए और हर राशि के हिस्से में नक्षत्रों के नौ चरण आए।

इस प्रकार बारह चंद्र मास का एक संवत्सर होता है। चंद्र मास में शुक्ल एवं कृष्ण, दो पक्ष होते हैं। साठ घटी की अहोरात्र और सात दिन होते हैं। योग सत्ताईस प्रकार के और करण ग्यारह होते हैं। सभी के विशिष्ट नाम होते हैं। साठ संवत्सर का एक चक्र होता है। सभी के अपने अलग नाम हैं। यह चक्र निरंतर चलता रहता है। बृहस्पति और शनि की स्थिति को ध्यान में रखकर संवत्सर की संख्या साठ निर्धारित की गई है। यदि गुरु और शनि किसी एक बिंदु से चलना शुरू करें तो अपनी गति में भिन्नता के कारण दोनों साठ साल बाद पुनः उसी बिंदु पर पहुँचेंगे। नवीन संवत्सर 2082 का नाम कालयुक्त है। नूतन वर्ष सभी के लिए मंगलमय हो।

भारत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पहचान विक्रम संवत

वर्ष प्रतिपदा 2082

संदीप सृजन
लेखक स्तंभकार हैं।

चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदय सति।।

हेमाद्रि के ब्रह्मपुराण के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्य उदय के समय ही परम पिता ब्रह्मा जी ने इस जगत की उत्पत्ति की थी। इसी कारण से प्रतिवर्ष चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा अर्थात प्रथमा तिथि को नववर्ष का प्रारंभ होता है और नया संवत्सर लागू होता है।

भारतीय कालगणना में पृथ्वी के सम्पूर्ण इतिहास को 14 भागों में बांटा गया है। प्रत्येक भाग को मन्वंतर नाम दिया गया है। एक मन्वंतर की आयु 30 करोड़ 67 लाख 20 हजार वर्ष की होती है। सृष्टि की उत्पत्ति को 1 अरब 96 करोड़ 08 लाख 53 हजार 120 वर्ष हो गए। विश्व में प्रचलित सभी कालगणनाओं में भारतीय काल गणना प्राचीनतम है। यह गणना ज्योतिष विज्ञान के द्वारा निर्मित है। आधुनिक वैज्ञानिक भी सृष्टि की उत?पत?ति का समय एक अरब वर्ष से अधिक बता रहे है। अपने देश में कई प्रकार की कालगणना की जाती है। भारतीय कालगणना का प्रत्येक संवत्सर वर्ष प्रतिपदा से ही प्रारम्भ होता है। सृष्टि संवत से लेकर कल्पाब्द, युगाब्द, वामन, श्री राम, श्री कृष्ण, युधिष्ठिर, शंकराचार्य, शालिवाहन, बंगला, हर्षाब्द, कलचुरी, फसली, वल्लभी, विक्रमी आदि सभी संवत्सर इसी दिन से प्रारम्भ होते हैं। वास्तव में ये वर्ष का सबसे श्रेष्ठ दिवस है। हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। हिन्दु शास्त्रानुसार इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारम्भ गणितीय और खगोलशास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। प्रतिपदा हमारे लिये क्यों महत्वपूर्ण है, इसके सामाजिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ हैं- इसी तिथि को रेवती नक्षत्र में विष कुंभ योग में दिन के समय भगवान के आदि अवतार मत्स्य रूप का प्रादुभाव भी माना जाता है। युगों में प्रथम सत्ययुग का प्रारम्भ भी इसी तिथि को हुआ था। साथ ही मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का राज्याभिषेक, मां दुर्गा की उपासना का नवरात्रि का प्रारम्भ, युगाब्द (युधिष्ठिर संवत) का आरम्भ, उज्जयिनी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी संवत् प्रारम्भ,शालिवाहन शक् संवत् आदी का प्रारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही माना जाता है।

भारतवर्ष में इस समय देशी विदेशी मूल के अनेक संवतों का प्रचलन है, किंतु भारत के सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्रीय संवत यदि कोई है तो वह 'विक्रम संवत' ही है। आज से लगभग 2082 वर्ष यानी 57 ईसा पूर्व में भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया था। उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से विक्रम संवत का भी आरम्भ हुआ था।

भारतीय परम्परा में चक्रवर्ती राजा विक्रमादित्य शौर्य, पराक्रम तथा प्रजाहितैषी कार्यों के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। उन्होंने 95 शक राजाओं को पराजित करके भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। राजा विक्रमादित्य के पास एक ऐसी शक्तिशाली विशाल सेना थी, जिससे विदेशी आक्रमणकारी सदा भयभीत रहते थे। ज्ञान विज्ञान, साहित्य, कला संस्कृति को विक्रमादित्य ने विशेष प्रोत्साहन दिया था। धंवंतरि जैसे महान् वैद्य, वराहमिहिर जैसे महान् ज्योतिषी और कालिदास जैसे महान् साहित्यकार विक्रमादित्य की राज्यसभा के नवरत्नों में शोभा पाते थे। प्रजावत्सल नीतियों के फलस्वरूप ही विक्रमादित्य ने अपने राज्यकोष से धन देकर दीन दुःखियों को साहूकारों के कर्ज़ से मुक्त किया था। एक चक्रवर्ती सम्राट होने के बाद भी विक्रमादित्य राजसी ऐश्वर्य भोग को त्यागकर भूमि पर शयन करते थे। वे अपने सुख के लिए राज्यकोष से धन नहीं लेते थे।

प्राचीन काल में नया संवत चलाने से पहले विजयी राजा को अपने राज्य में रहने वाले सभी लोगों को ऋण-मुक्त करना आवश्यक होता था।राजा विक्रमादित्य ने भी इसी परम्परा का पालन करते हुए अपने राज्य में रहने वाले सभी नागरिकों का राज्यकोष से कर्ज़ चुकाया और उसके बाद चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मालवगण के नाम से नया संवत चलाया। भारतीय कालगणना के अनुसार वसंत ऋतु और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अति प्राचीन काल से सृष्टि प्रक्रिया की भी पुण्य तिथि रही है। वसंत ऋतु में आने वाले वार्सतिक नवरात्रि का प्रारम्भ भी सदा इसी पुण्य तिथि से होता है। विक्रमादित्य ने भारत की इन तमाम कालगणनापरक सांस्कृतिक परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए ही चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से ही अपने नवसंवत्सर संवत को चलाने की परम्परा शुरू की थी और तभी से समूचा भारत इस पुण्य तिथि का प्रतिवर्ष अभिवंदन करता है।

शालिवाहन शक का प्रारंभ इसी दिन से होता है। शालिवाहन नामक एक कुम्हार के लड़के ने मिट्टी के सैनिकों की सेना बनाई और उस पर पानी छिटककर उसको सजीव बनाया और उसकी मदद से प्रभावी शत्रुओं का पराभव किया। इस विजय के प्रतीक रूप में शालिवाहन शक का प्रारंभ हुआ। शालिवाहन ने मिट्टी की सेना में प्राणों का संचार किया, यह एक लाक्षणिक कथन है। उसके समय में लोग बिलकुल चैतन्यहीन, पौरुषहीन और पराक्रमहीन बन गए थे। इसलिए वे शत्रु को जीत नहीं सकते थे। मिट्टी के मुर्दों को विजयश्री कैसे प्राप्त होगी? लेकिन शालिवाहन ने ऐसे लोगों में चैतन्य भर दिया। मिट्टी के मुर्दों में, पत्थर के पुतलों में पौरुष और पराक्रम जाग पड़ा और शत्रु की पराजय हुई।

ऐसी कई लोगों की मान्यता है कि इसी दिन श्री रामचंद्रजी ने बाली के अत्याचारों से दक्षिण की प्रजा को मुक्त किया था। बाली के त्रास से मुक्त हुई प्रजा ने घर-घर में उत्सव मनाकर गुड़ियाँ (ध्वजाएँ) फहराईं। आज भी घर के आँगन में गुड़ी खड़ी करने की प्रथा महाराष्ट्र में प्रचलित है। इसीलिए इस दिन को 'गुड़ी पड़वा' नाम मिला है। घर के आँगन में जो 'गुड़ी' खड़ी की जाती है, वह विजय का संदेश देती है। घर में बाली का (आसुरी संपत्ति का राम यानी देवी संपत्ति ने) नाश किया है, ऐसा उसमें सूचक है। गुड़ी यानी विजय पताका। भोग पर योग की विजय, वैभव पर विभूति की विजय और विकार पर विचार की विजय। मंगलता और पवित्रता को वातावरण में सतत प्रसारित करने वाली इस गुड़ी को फहराने वाले को आत्मनिरीक्षण करके यह देखना चाहिए कि मेरा मन शांत, स्थिर और सात्विक बना या नहीं?

पिछले दो हज़ार वर्षों में अनेक देशी और विदेशी राजाओं ने अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की तुष्टि करने तथा इस देश को राजनीतिक दृष्टि से पराधीन बनाने के प्रयोजन से अनेक संवतों को चलाया किंतु भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान केवल विक्रमी संवत के साथ ही जुड़ी रही।

अंग्रेज़ी शिक्षा-दीक्षा और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण आज भले ही सर्वत्र ईस्वी संवत का बोलबाला हो और भारतीय तिथि-मासों की काल गणना से लोग अनभिज्ञ होते जा रहे हों परंतु वास्तविकता यह भी है कि देश के सांस्कृतिक पर्व - उत्सव तथा राम , कृष्ण , बुद्ध , महावीर, गुरु नानक आदि महापुरुषों की जयंतियाँ आज भी भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं, ईस्वी संवत के अनुसार नहीं। विवाह-मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या श्राद्ध-तर्पण आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं। अन्य संस्कृतियों की कालगणना की तुलना में भारतीय काल गणना अधिक वैज्ञानिक है। भारतीय मनीषियों ने सूर्य और चन्द्रमा दोनों को आधार बनाकर अपना कैलेण्डर निर्मित किया। वर्ष प्रतिपदा अपनी परंपरा को स्मरण करने का हमें अवसर देती है। आइए आप और हम भारतीय संस्कृति का नववर्ष का अभिनंदन करे। और अपनी परम्पराओं को जीवित रखें।

नव संवत्सर आगमन

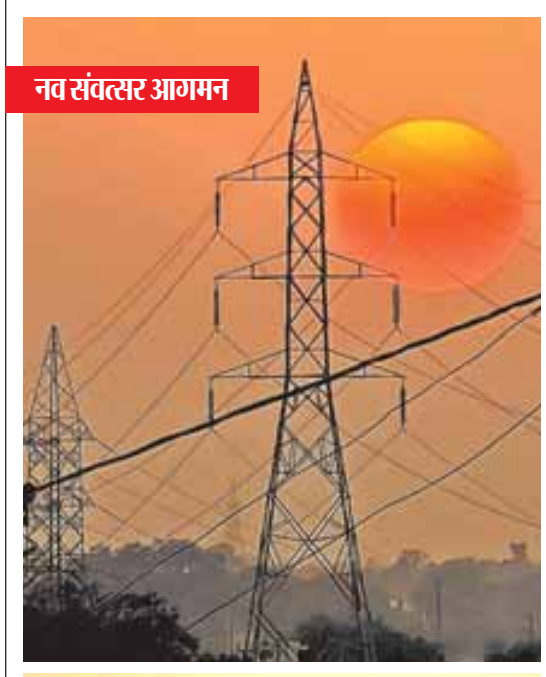

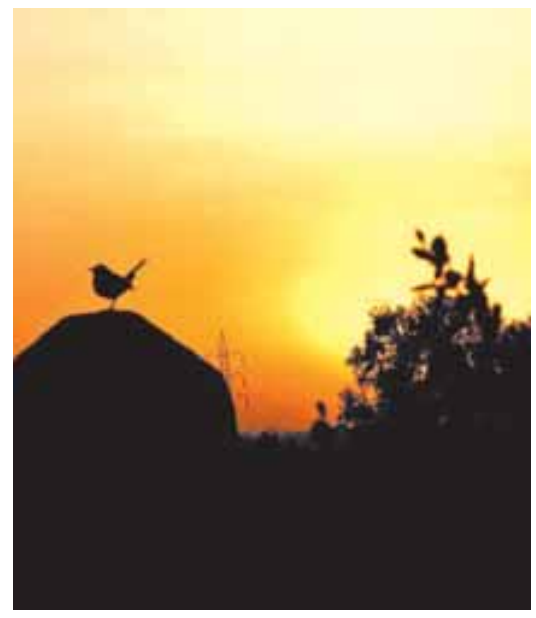

फोटो: बंसीलाल परमार

इक्यासी वर्ष पूर्व आज के दिन झूम उठी थी विक्रम नगरी

वर्ष प्रतिपदा 2082

डॉ. राजशेखर व्यास
(पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक दूरदर्शन,, लेखक चिंतक निर्माता निर्देशक)

विक्रम नव वर्ष 2082 का आरम्भ आज 30 मार्च से हो रहा है। विक्रम संवत 2081 बिदा ले रहा है और गुड़ी पड़वा ,चेटी चंड के अवसर पर उज्जैन में विक्रमोत्सव का प्रथम चरण भव्य रूप से संपन्न हो रहा है। उल्लेखनीय है कि उज्जैन में विक्रम संवत् के अवसर पर गौरव यात्रा निकाली जाती रही है। इतिहास के गवाक्षों से झांक रहा है वह दिन जब आज से 81 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् 2000 पूरे होने के उपलक्ष्य में समूची विक्रम नगरी झूम उठी थी। और उसके साथ-साथ महानगरों की धरा पर भी विक्रम के पराक्रम का परचम लहरा उठा था।

विक्रम संवत् दो हजार का पूरा होना भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। धूमिल अतीत में जिस विक्रम संवत् का प्रवंतन हुआ था, उसके पथ की वर्तमान रेखा यद्यपि अंधकार में डूबी है परंतु इस डोर के सहारे एवं गौरवमय रहे हैं। विक्रम संवत् के प्रथम हजार वर्षों में हमने मात्र शिवनागों, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, स्कंदगुप्त, यशोधर्मन, विष्णुवर्धन आदि के बल और प्रताप के सम्मुख विदेशी शक्तियों को थर-थर कांपते हुए देखा।

भारत के उपनिवेश बसते देखे, भारत की संस्कृति और उसके धर्म का प्रसार बाहर के देशों में देखा। कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ आदि की काव्य-प्रतिभा तथा दंडि और बाण भट्ट की विलक्षण लेखन-शक्ति देखी। इसके बाद भारतीय संस्कृति के उत्थान और पतन के कई दौर देखे लेकिन भारतीय संस्कृति के अभिमानियों के लिए यह कम गौरव की बात नहीं कि आज भारतवर्ष में प्रवर्तित विक्रम संवत्सर, बुद्ध निर्वाण काल-गणना को छोड़कर संसार के प्रायः सभी प्रचलित ऐतिहासिक संवतों से अधिक प्राचीन है।

विक्रम यह था वह था, ये विवाद केवल अनुसंधान प्रिय पंडितों का समीक्षार्थ विषय है। दरअसल विक्रम में हम अपने विशाल देश की परतंत्र पाश पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाली समर्थ शक्ति की अभ्यर्थना करते हैं। इसकी पावन स्मृति की धरोहर संवत वर्ष काल गणना की स्मरण मणि की तरह इतिहास की श्रृंखला भी एक-दूसरे से जुड़ी चली जाती है।

विक्रम, कालिदास और उज्जयिनी भारत के लिए स्वाभिमान और गौरव का विषय हैं। उसी उज्जयिनी या उज्जैन में पद्म भूषण, साहित्य वाचस्पति स्व. पं. सूर्यनारायण व्यास से विक्रम संवत के दो हजार वर्ष पूर्ण होने पर 1942 में एक मासिक पत्र 'विक्रम' का प्रकाशन आरंभ किया। इससे पहले पं. व्यास अपने पंचांग का प्रकाशन करते थे। विक्रम मासिक का प्रकाशन एक विशेष उद्देश्य को लेकर किया गया था। और वह उद्देश्य भारत के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा करना था।

उन्हीं दिनों विक्रम द्विसहस्राब्दी की योजना भी बनी। उस योजना में ग्वालियर के महाराजा जीवाजीराव सिंधिया का विशेष सहयोग रहा। विक्रम पत्र के माध्यम से जब यह योजना देश के सम्मुख पं. व्यास ने रखी थी, तब भी वे नहीं जानते थे कि उनकी इस योजना का स्वागत होगा। विशेषकर वीर सावरकर और केएम मुंशी जी ने अपने पत्र सोशल वेलफेयर में इस योजना का प्रारूप पूरे विवरण के साथ प्रकाशित किया।

जैसे-जैसे समारोह का कार्य प्रगति कर रहा था, देश के विभिन्न भागों में एक सांस्कृतिक वातावरण बन गया था। लगभग उसी समय पत्र-पत्रिकाओं में रवींद्रनाथ टैगोर और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने भी विक्रम पर कविताएँ लिखीं। शौर्य और विक्रम उत्सव के इस उत्सव के अवसर पर हमारे खाये बल, पराक्रम की चर्चा देशी राजाओं के रक्त में उबाल अवश्य लाएगी। वैसे इन आयोजन में हिंदू मुस्लिम भेदभाव को कोई जगह नहीं थी, किंतु जिन्ना के विरोध से वातावरण में विकार पैदा हो गया लेकिन इस सबके बावजूद चेतना फैल रही थी, जागृति फैल रही थी।

मुंबई में बड़े पैमाने पर यह समारोह हुआ। लगभग उसी समय प्रख्यात फिल्म-निर्माता-निर्देशक विजय भट्ट ने पं. व्यास के आग्रह पर विक्रमादित्य सिनेमा का निर्माण आरंभ किया। इस फिल्म में विक्रमादित्य की मुख्य भूमिका भारतीय सिनेमा जगत के महानायक पृथ्वीराज कपूर ने निभाई थी। विक्रम कीर्ति मंदिर का निर्माण कर उसमें पुरातत्व संग्रहालय चित्रकला कक्ष प्राचीन ग्रंथ संग्रहालय आदि रखने का निश्चय किया गया। कुछ समय बाद ही रियासतों का विलीनीकरण हुआ, मध्य भारत बना और हजारों तरह की बाधाओं को पार कर उज्जैन में विक्रम विश्वविद्यालय बना।

इस अवसर पर हिंदी-मराठी-अंग्रेज़ी में महाभारत से बड़ा एक ग्रंथ 'विक्रम स्मृति ग्रंथ' भी पद्मभूषण पंडित सूर्यनारायण व्यास के सम्पादन में प्रकाशित किया गया... इस ग्रंथ में उस समय उपलब्ध विश्व के सभी प्रमुख लेखक राजनेता इतिहासकार ने विक्रम कालिदास और उज्जयिनी पर लिखा, विश्व के सभी महान चित्र कारों ने इसकी साज सज्जा की थी , विक्रम कालिदास और उज्जयिनी पर पंडित व्यास के इस अत्यंत प्रामाणिक कार्य पर इस से पूर्व इसके बाद इस से आगे कोई काम नहीं हुआ बल्कि हज़ारों शोध प्रबंध डॉक्टर पीएचडी इस ग्रंथ से सामग्री उठा उठा कर विभिन्न विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हो गए!

मध्यप्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ,सम्राट विक्रमादित्य के गौरवशाली और न्यायप्रिय शासन ,तथा विक्रम संवत को जन -जन तक पहुंचाने के लिए उज्जैन सहित पूरे देश में विक्रमोत्सव के तहत , सम्राट विक्रमादित्य पर महानाट्य सहित विभिन्न व्याख्यानों ,प्रदर्शनियों और अन्य आयोजनों से उज्जयिनी का नाम सार्थक और गौरवान्वित करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

चैत्र नवरात्रि

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

स्त्री-शक्ति के नौ रूप नवजीवन के प्रतीक

नवदुर्गाओं में शैल पुत्री प्रथम दुर्गा मानी जाती है। इनके हाथों में त्रिशूल और कमल पुष्प सुशोभित हैं। इनका वाहन वृषभ है। शैल पुत्री अपने पूर्वजन्म में दक्ष प्रजापति की कन्या थीं और इनका नाम सति रखा गया। पिता की इच्छा के विरुद्ध सती ने भगवान शिव से विवाह किया। दक्ष ने एक बार महायज्ञ का आयोजन किया। किंतु इसमें शिव व सती को आमंत्रित नहीं किया। इसे सती ने शिव का अपमान माना और बिना बुलाए ही यज्ञ स्थल पर पहुंच गई। वहां उन्होंने अपने पिता को शिव को आमंत्रित करने के लिए बाध्य किया। किंतु प्रजापति ने शिव का उपहास उड़ाया और उन्हें बुलाने से इनकार कर दिया। तब सति ने क्रोधित होकर यज्ञ कुंड में कूंदकर अपने प्राणों की आहुती दे दी। शिव को जब सति के प्राण त्यागने का समाचार मिला, तो उन्होंने अपने गणों को भेजकर यज्ञ का विध्वंस करा दिया। अगले जन्म में यही सती शैलराज हिमालय के घर में पैदा हुई और शैलपुत्री कहलाई। इन्हें ही पार्वती कहा जाता है।

शारदीय नवरात्रों के बाद चैत्र नवरात्रों में एक बार फिर हम स्त्री शक्ति के नौ रूपों की पूजा करेंगे। नवरात्र में जो नव उपसर्ग हैं, वे नौ की संख्या के साथ-साथ नूतनता के भी प्रतीक है। इस अर्थ में वे परिवर्तन के सूचक है। ये रूप शक्ति, स्त्रीत्व और समृद्धि के प्रतीक भी हैं। इन स्वरूपों की पूजा करते हुए स्त्री रूपी इन देवियों के भव्य रूप हमारी चेतना में उपस्थित रहते हैं। इन्हें षक्ति रूप इसलिए कहा जाता है, क्योंकि जब सृष्टि के सृजन काल में देव पुरूश दानवों से पराजित हुए, तो उन्हें राक्षसों पर विजय के लिए दुर्गा से अनुनय करना पड़ा। एक अकेली दुर्गा ने विभिन्न रूपों में अवतरित होकर अनेक रक्षसों का नाश कर सृश्टि के सृजन को व्यवस्थित रूप देकर गति प्रदान की। प्रतीक रूप में ये रूप अंततः मनुष्य की ही विभिन्न मनोदषाओं के परिश्कार से जुड़े हैं। इन मनोदशाओं को राक्षसी प्रवृत्ति कह सकते हैं, जो मनुष्य की नकारात्मक विकृतियों के भी प्रतीक हैं। इन रूपों के महत्व को जानते हैं।

नवदुर्गाओं में शैल पुत्री प्रथम दुर्गा मानी जाती है। इनके हाथों में त्रिषूल और कमल पुष्प सुशोभित हैं। इनका वाहन वृषभ है। शैल पुत्री अपने पूर्वजन्म में दक्ष प्रजापति की कन्या थीं और इनका नाम सति रखा गया। पिता की इच्छा के विरुद्ध सती ने भगवान शिव से विवाह किया। दक्ष ने एक बार महायज्ञ का आयोजन किया। किंतु इसमें शिव व सती को आमंत्रित नहीं किया। इसे सती ने शिव का अपमान माना और बिना बुलाए ही यज्ञ स्थल पर पहुंच गई। वहां उन्होंने अपने पिता को शिव को आमंत्रित करने के लिए बाध्य किया। किंतु प्रजापति ने षिव का उपहास उड़ाया और उन्हें बुलाने से इनकार कर दिया। तब सति ने क्रोधित होकर यज्ञ कुंड में कूंदकर अपने प्राणों की आहुती दे दी। शिव को जब सति के प्राण त्यागने का समाचार मिला, तो उन्होंने अपने गणों को भेजकर यज्ञ का विध्वंस करा दिया। अगले जन्म में यही सती शैलराज हिमालय के घर में पैदा हुई और शैलपुत्री कहलाई। इन्हें ही पार्वती कहा जाता है।

दुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी का है, श्वेत वस्त्रधारी ब्रह्मचारिणी के एक हाथ में जपमाला और दूसरे में कमंडल है। ब्रह्मचारिणी का जन्म पर्वतराज हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से हुआ था। पहले इनका नाम शुभ लक्षणों को देखते हुए पार्वती रखा गया। बाद में नारद मुनि ने हिमालय को बताया कि यही पार्वती पूर्व जन्म में सती थीं। इस रहस्य को जानने के बाद पार्वती में शिव को प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो गई। इसके लिए देवी ने कठिन तपस्या की। इससे उनका शरीर कृषकाय में बदल गया। तपस्या से तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। तब ब्रह्मा ने उनके समक्ष उपस्थित होकर मनचाहा वर मांगने की प्रार्थना की। पार्वती ने शिव को मांगा। ब्रह्मा ने पार्वती को आर्शीवाद तो दिया ही, उनकी काया को भी सुदंर रूप में बदल दिया। यहीं ब्रह्मा ने तप का आचरण करने के कारण ब्रह्मचारिणी का नाम दिया।

नवरात्रि के तीसरे दिन दुर्गा के शरीर से नई शक्ति के रूप में चंद्रघंटा की वंदना की जाती है। सिंह पर सवार ये देवी निडरता के साथ सौम्यता के गुणों से भी भरपूर है। इनके आभामंडल से अदृश्य शक्ति का विकिरण होता रहता है। इनके शरीर का वर्ण स्वर्ण है। इनके दस हाथ हैं, जिनमें खड्ग, अस्त्र-षस्त्र, वाण आदि विभूशित हैं। देवासुर संग्राम में इनके घंटे की भयानक ध्वनि से सैंकड़ों दैत्य मारे गए थे। इनकी मुद्रा हमेशा युद्ध के लिए तत्पर दिखाई देती है।

दुर्गा का चौथा स्वरूप कुष्मांडा देवी का है। इनका निवास सूर्यलोक में है। इसीलिए इनके शरीर की कांति और आभा सूर्य के समान सदैव प्रकाशित रहती है। सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों में इन्हीं देवी का आलोक प्रदीप्त है। जब ब्रह्मांड का अस्तित्व नहीं था और चारों और अंधेरा था, तब इन देवी ने अपनी मंदमुस्कान द्वारा अंड अर्थात ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति की। इसी कारण इन्हें कुष्मांडा कहा गया। सिंह पर सवार कुष्मांडा अष्ट भुजाधारी हैं। इनके हाथों में कमण्डल, धनुष-वाण, कमल-पुष्प, अमृत-कलश, चक्र, गदा और सभी प्रकार की सिद्धियां व

जपमाला सुशोभित हैं।

दुर्गा का पांचवां रूप स्कंद माता का है। इनके पुत्र कार्तिकेय का एक नाम स्कंद है, इसलिए इन्हें स्कंद माता कहा जाता है। सिंह पर सवार इन देवी की चार भुजाएं है। इनके दो हाथों में कमल पुष्प है, एक हाथ वरदान की मुद्रा में है और दूसरा हाथ पुत्र स्कंद को गोद में लिए है। इस कारण ये पद्मासना देवी भी कहलाती हैं।

इनके बाद छठे दिन देवी कात्यायनी की पूजा की जाती है। कात्य नामक ऋषि की वंशावली में एक प्रसिद्ध ऋषि कात्यायन हुए हैं। ये दुर्गा के भक्त थे। इस भक्ति से प्रसन्न होकर दुर्गा ने कात्यायन को कोई वर मांगने को कहा। तब महर्षि ने दुर्गा से अपने घर में पुत्री के रूप में जन्म लेने का आग्रह किया। दुर्गा ने यही वरदान दे दिया। कुछ समय बाद जब पृथ्वी पर महिशासुर नाम के असुर का अत्याचार बढ़ गया, तब दुर्गा के तेज से कात्यायन की पत्नी की कोख से देवी कात्यायनी ने जन्म लिया। पुराणों में ऐसा कहा गया है कि इस तेज में ब्रह्मा, विश्णु और महेश के तेज का भी समावेश है। चार भुजाधारी कात्यायनी का वाहन सिंह है। इनकी चार भुजाओं को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक माना गया है।

दुर्गा के सातवें रूप को देवी कालरात्रि के नाम से जाना जाता है। इनकी काया अमावस्या की गहरी काली रात की तरह काली है। इनके मस्तक पर तीन नेत्र विद्यमान है, जो ब्रह्मांड के समान गोल तथा तीन लोकों के प्रतीक हैं। इनके केस घने एवं बिखरे हुए हैं। इनके गले में विद्युत ज्वाला सी प्रकाशित माला पड़ी हुई है। सांस लेते समय इनके नासिका छिद्रों से अग्नि की लपटें निकलती रहती हैं। इनकी सवारी गधा है और ये चार भुजाओं वाली हैं। इनके दो हाथों में तलवार और नुकीला अस्त्र हैं। जबकि एक हाथ वरदान की मुद्रा में और दूसरा अभय की मुद्रा में है। इन देवी को राक्षस और भूत-प्रेत का विनाश करने वाली देवी माना जाता है।

दुर्गा पूजन के आठवें दिन महागौरी की उपासना की जाती है। महागौरी ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए लंबे समय तक तपस्या की। इस समय उन्होंने धूप, आंधी, वर्षा और ठंड के थपेड़े सहे। इस कारण उनका शरीर कृषकाय और काला हो गया। अंत में जब भगवान शिव ने पार्वती रूपी इन महागौरी को पत्नी रूप में स्वीकार किया तब शिव ने अपनी जटाओं से निकलने वाली गंगा की जलधारा से पार्वती का शरीर धोया। इस पवित्र और शुद्ध गंगाजल से पार्वती का मैल धुल गया और उनका शरीर गौर वर्ण की तरह चमकने लगा। इसी कारण वे महागौरी के नाम से जानी जाने लगीं। इनका वाहन बैल है और इनकी मुद्रा अत्यंत शांत एवं सौम्य है।

नवरात्रि के अंतिम यानी नौवें दिन सिद्धिदात्री की पूजा करने की परंपरा है। ये सभी रिद्धी-सिद्धियों की स्वामिनी हैं। पुराण कथाओं के अनुसार जब दुर्गा के मन में सृश्टि की रचना का विचार उत्पन्न हुआ, तब उन्होंने शिव को उत्पन्न किया। शिवजी ने उत्पन्न होने पर दुर्गा से सिद्धियों की मांग की। शिव को सिद्धियां प्रदान करने के लिए एक अंश से देवी सिद्धिदात्री का जन्म हुआ। जो सभी प्रकार की सिद्धियों की ज्ञाता थीं। बाद में सिद्धिदात्री ने शिव को 18 प्रकार की दुर्लभ, अमोघ और शक्तिशाली सिद्धियां दीं। इनसे ही शिव में अलौकिक शक्तियों का तेज उत्पन्न हुआ। इसके बाद शिव ने विष्णु की और विष्णु ने ब्रह्मा की उत्पत्ति की। ब्रह्मा को सृश्टि रचना का, विष्णु को सृश्टि पालन का और शिव को सृष्टि के संहार का दायित्व सुपुर्द किया।

ब्रह्मा जी को जब नर एवं नारी के अभाव में सृष्टि की रचना असंभव लगने लगी, तब उन्होंने माता सिद्धिदात्री का स्मरण किया। तब सिद्धिदात्री ने प्रकट होकर सिद्धियों द्वारा शिव का आधा शरीर नारी का बना दिया। इस प्रकार शिव आधे नर और आधे नारी के रूप में अर्द्धनारीश्वर कहलाए। तब कहीं जाकर ब्रह्मा की सृश्टि सृजन संबंधी समस्या का समाधान हुआ। सही मायने में नवरात्रि व्रत उपवास का संदेश

स्त्री के सरंक्षण से जुड़ा है।

गुड़ी पड़वा विशेष पर

अमित राव पवार

युवा लेखक

शक्ति और भक्ति के द्वारा ही सम्पूर्ण जगत गतिशील

विश्व में ऐसे अनेक देश हैं,जो समयानुसार गर्भ में समा गए इनका संघर्ष व युद्ध तक विफल रहा संस्कृती नष्ट हो गई आज इनका नाम लेने वाला कोई नहीं बचा,किंतु विश्व में भारतराष्ट्र ही एक मात्र देश है जो लाखों-हजारों, सैकड़ो वर्षो का अपना सुनहरा इतिहास संजोय हुएं आज भी विश्व के समक्ष मजबूती के साथ खड़ा है। जब हम भारत देश के मूल में देखने का प्रयास करते है तो हमें इस धरती पर मातृत्व दिखाई देता है। हमारे वेद-पुराण तथा धर्मग्रंथ सदियों से माँ व मातृभूमि की महिमा का गुणगान करते रहे हैं। माँ का स्नेह,दुलार और वात्सल्य अतुलनीय है इसी तरह,जन्मभूमि की महत्ता हमारे समस्त भौतिक सुखों से कहीं ज्यादा है। इसलिए कहा गया है कि जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥अर्थात÷मित्र,धन्य,धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक सम्मान है माँ और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है। अतः दूर-दूर तक विश्व में कोई दूसरा देश दिखाई नहीं देता जिसने अपने देश को माँ कहा है। यह पुत्र व माँ के मध्य ममतामयी संबंध स्थापित करने वाला भारतराष्ट्र है। जिसके जय घोष में हम भारतवासी भारत माता की जय कहते हैं।

हजारों संघर्ष के बाद भी इस मातृभूमि के असंख्य वीरपुत्रों ने अपनी मातृभूमि भारत माँ के लिए हँसते-हँसते वीरगति को प्राप्त किया। किंतु अपनी भारत माँ पर कभी आंच नहीं आने दी,यहां की स्त्री स्वरूप माताओं ने भी ऐसे अनेकों पुत्र को जन्म दिया जो इस मातृभूमि के लिए प्राणों तक की आहुति बिना विचार,बिना सँकोज किये पलभर में दे गए। विश्व में अनेक देशों की तरह हम भारतीयों के लिए यह भूमि टुकड़ा नहीं अपितु धरती माँ है। इस धरती माँ ने जहां बिछु को जन्म दिया वही शेरो को भी इसने ही जन्म दिया है।माँ अपने पुत्र और पुत्र अपनी माँ पर कभी आज नहीं आने देता। वीर शिवाजी बनकर हमेशा पुत्र तैयार रहा तथा माँ सदैव जगदंबा बनाकर पुत्र के साथ खड़ी रही। इस सम्पूर्ण प्रकृति को भी हमने माँ के रूप में स्वीकार किया जो शक्ति का एक रूप है हमें अन्न से लेकर जीवनप्राण वायु तक प्रदान कर रही यह भाव हमे स्व का संदेश दे रहा है। जो हमें यह ज्ञात करवा रहा है कि शिवशक्ति से ही संपूर्ण जगत चलायमान है। देवी अहिल्याबाई होलकर ने समाज व लोककल्याण हित में अपने पुत्र मालेराव को दंडित करने से पीछे नही हुईं। माता जीजाऊ ने भी इस राष्ट्र की संस्कृति-सभ्यता,धर्म को सुरक्षित रखने के लिए ईश्वर से एक पुत्र मांगा जो अखंड भारत के साथ धर्म की रक्षा करें।झांसी की रानी ने अपने पुत्र को पीठ पर बांधकर सन 1857 की क्रांति में भाग लिया,सावित्रीबाई फुले,रानी दुर्गावती ऐसे अनेकों उदाहरण है। जिन्होंने अखंड भारत की रक्षा के लिए इस मातृभूमि की सेवा करने के अवसर को जाने नहीं दिया।

शक्ति और भक्ति के द्वारा ही यह सम्पूर्ण जगत गतिशील है। शक्ति का महापर्व जिसमे शुद्ध मन से भक्ति के साथ शक्ति की आराधना की जाती नवरात्रि जो हिंदुओं का मुख्य पर्व है इस पर्व को सांसारिक-आध्यात्मिक जीवन दोनों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्ष-भर में यह नौ रातें माँ शक्ति की प्रार्थना के लिए विशेष होती है। नौ रूपों की पूजा आराधना अत्यंत मनोयोग से भारतीय करते हैं,इनमें जिन-जिन शक्ति स्वरूपा की पूजा की जाती है,यह वास्तव में सर्वोच्च देवी-माँ पार्वती है,जो अपनी अभिव्यक्ति में भिन्न-भिन्न उद्देश्य के अनुसार जहां सौम्य रूप में पोषण करने वाली,वही समय आने पर क्रोधी एवं सुरक्षात्मक शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करती है।वर्ष में चार नवरात्र जो कि-माघ,चैत्र,आषाढ़ एवं अश्विन में आते हैं। ये शक्ति के नौ रूप ही युगों- युगों से स्त्री शक्ति को प्रेरणा दे रहे है।जीवन जीने के लिए जीवन कैसे संतुलित बनाएं रखे इसका भी उद्देश्य माँ देवी के नौ रूप में समाहित है। साथ ही साथ परिवार का संचालन पुत्र-पुत्री एवं कुटुंब का ध्यान रखना आज भी संस्कृति के अंतर्गत स्त्री का जारी है।घर परिवार के साथ समाज का कार्य करते हुए व्यवसाय-नौकरी करना यही दर्शाता है कि जिस तरह से माँ दुर्गा के नौ हाथों में भिन्न-भिन्न अस्त्र-शस्त्र,शास्त्र है यही भूमिका आज वर्तमान समय में स्त्री निभा रही है और अपनी संतानों के साथ संपूर्ण कुटुंब को एक धागे में पिरोकर चल रही है। जिस तरह भारत माँ अपने आँचल में विभिन्न जातियों,धर्म को लेकर चल रही फिर भी चेहरे पर कोई सिकन दिखाई नहीं यह भारत माँ के आंचल में ही संभव होता नजर आता है।

नववर्ष विशेष

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट

लेखक शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय रतलाम में अध्यापक हैं।

नव संवत्सर से होकर गुजरता है उल्लास

हर पल खुशियों को बांटने की संस्कृति और आचार-विचार के चलते त्योहारों की रचना हुई है। व्यवहारगत तो यही है कि व्यक्ति को हरदम खुश ही रहना चाहिये। इसलिए भारतीय परम्परा में लगभग हर दिन तीज त्यौहार होते ही है। जितनी भी हिन्दी तिथियाँ हैं एकम, दूज, तीज, चौथ, पंचमी, छठ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, बारस, तेरस, चौदस और अमावस्या या पूर्णिमा। सभी के नाम वर्ष भर कोई न कोई त्यौहार हैं। कोई भी दिन हमारी संस्कृति में अशुभ नहीं हैं। यहाँ तक कि यह भी शास्त्रों में है कि इस सृष्टि का निर्माण जब भी ब्रह्मा ने किया होगा उस दिन का भी त्यौहार है। चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे अहनि, शुक्ल पक्षे समग्रेतु तु सदा सूर्योदये सति। ब्रह्म पुराण में वर्णित इस श्लोक के अनुसार चैत्र मास के प्रथम सूर्योदय पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इसे गुड़ी पड़वा कहा गया। गुडी का निर्माण उस सृष्टि का प्रतीक है जो हमारे अस्तित्व का आधार स्तंभ है। पीले-लाल रंग के रेशम के कपड़े उस सामाजिक ताने-बाने को बताते हैं जिससे यह संसार आबद्ध है। रंग उस उल्लास व जीवंतता को दर्शाते हैं और पीला, लाल रंग उस संवेदनशीलता को जिनका तरंग दैर्ध्य ज्यादा है। जीवन की निरंतरता, पवित्रता में स्निग्धता का कार्य करते है संयम, उपकार के प्रतीक, आम और उसके पत्ते। पुष्प इसलिए लगाए जाते हैं कि फूलों की तरह खिलना हमारा मूल स्वभाव है। मिट्टी के लौटे को भी ऊपर लगाया जाता है जो प्रतीक है आकाश का, अनंतता का। इसी की गुड़ी बनाकर द्वार पर फहराई जाती है ताकि हमे याद रहे कि हम उस अनंतता के वंशज हैं। यह ब्रह्म पुराण जो कि एक पवित्र हिंदू ग्रंथ में दर्शाया गया है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी दिन पूरी दुनिया को फिर से विकसित किया था। भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार के समय जब पृथ्वी जलमग्न हो गई, तब ब्रह्मा ने फिर से सृजन का काम इसी शुभ दिन की थी। इस दिन ब्रह्मा पूजा का विशेष महत्व है। निर्माण और ईश्वर की करुणा की यह प्रतिकृति हमारे लिए नूतन आयाम खोलती है इसलिए इसे नवसंवत्सर भी कहा जाता है। काल गणना को भास्कराचार्य ने इसी तिथि को ध्यान में रखकर किया था।

काल किसी के हाथ में तो नहीं होता है परंतु उसे सूर्य, पृथ्वी की गति के आधार पर गणना कर उसे सुविधाजनक स्थिति में बनाया गया ताकि जीवन में काल के महत्व को महसूस किया जा सके। गणना की अभूतपूर्व प्रक्रिया के तहत पंचांग का प्रादुर्भाव भी यहीं से है। ग्रह-नक्षत्रों की विभिन्न स्थितियों आधार पर यहीं से ज्योतिषीय गणना कर भविष्य में ताक-झांक कर अशुभ संकेतों को पहचान कर आगाह करना या होना और उसका उपाय करना तभी से प्रचलित हुआ। गुड़ी पड़वा वह अवसर है जो हूणों पर शाकास की विजय का प्रतीक है। गुड़ी पड़वा के पीछे की कहानी और शालिवाहन कैलेंडर के अनुसार, इस दिन हूणों को राजा शालिवाहन ने हराया था। किंवदंती में कहा गया है कि गुड़ी पड़वा के दिन सत्य युग शुरू हुआ। भारतीय पंचांग और काल निर्धारण का आधार विक्रम संवत ही हैं। जिसकी शुरुआत मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी से हुई। यह कैलेंडर राजा विक्रमादित्य के शासन काल में जारी हुआ था तभी इसे विक्रम संवत के नाम से भी जाना जाता है। विक्रमादित्य की जीत के बाद जब उनका राज्यारोहण हुआ तब उन्होंने अपनी प्रजा के तमाम ऋणों को माफ करने की घोषणा करने के साथ ही भारतीय कैलेंडर को जारी किया इसे विक्रम संवत नाम दिया

ब्रह्म पुराण में वर्णित इस श्लोक के अनुसार चैत्र मास के प्रथम सूर्योदय पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इसे गुड़ी पड़वा कहा गया। गुडी का निर्माण उस सृष्टि का प्रतीक है जो हमारे अस्तित्व का आधार स्तंभ है। पीले-लाल रंग के रेशम के कपड़े उस सामाजिक ताने-बाने को बताते हैं जिससे यह संसार आबद्ध है। रंग उस उल्लास व जीवंतता को दर्शाते हैं और पीला, लाल रंग उस संवेदनशीलता को जिनका तरंग दैर्ध्य ज्यादा है।

गया। ब्रह्मांड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नवसंवत यानी संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें एवं 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में दिया गया है। प्रकृति का जब स्वरूप बदलता है और नव सृजन को भूमिका मिलती है, जैसे पतझड़ के बाद नए किसलय पेड़ों पर आ जाते हैं और पुराने पत्ते उसी पेड़ के नीचे गिरकर अपने पालक और जन्मदाता पेड़ के लिए उर्वरक बनकर उन्हे जीवंत बनाए रखते हैं और नव किसलयों को यह संदेष भी दे देते हैं कि वे इस ऋण के प्रति सदैव कृतज्ञ रहें। जीवन में हमारे भी जन्मदाता, पालक होते हैं उनका ऋण उतारना सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है जीवन का। जैसे-जैसे हमारे समाज में वृद्धा आश्रम बढ़ रहे हैं जो दर्शाता है कि हम प्रकृति के अनुकूल नहीं जीवन यापन कर पा रहे हैं। इसका सीधा-सीधा परिणाम यह है कि हमारे समाज में तनाव, अवसाद, कुंठा, दबाव, गुस्सा, असंवेदनशीलता की बढ़ौतरी हो रही है।

गुड़ी पड़वा का संबंध फसलों से भी है चैत्र माह में फसलें और उनके साथ अथाह मेहनत दोनों पक कर बाहर आती हैं। पसीने की बूंदों में तो महक होती है वह फसलों के लगे अंबार में दिखाई देती है। धरती मां के प्रति अनुपम कृतज्ञता गुड़ी पड़वा के त्यौहार के माध्यम से ही निकलती है। यह काल भगवान राम से भी जुडा है। इस दिन राम जी का राज्यारोहण किया गया था और कालांतर में युधिश्ठिर का भी राज्यारोहण इसी दिन हुआ था। गुडी पड़वा त्योहार, जो दक्षिण में उगादी और उत्तर में चेटी चंद के रूप में मनाया जाता है, आमतौर पर मार्च के अंत और अप्रैल की शुरुआत के बीच होता है। होला मोहल्ला, विशु, वैशाखी, चेटीचंड, चित्रेय तिरुविजा आदि सभी की तिथि इस नव संवत्सर के आसपास आती हैं। इसी दिन से सतयुग की शुरुआत मानी जाती है। इसी दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लिया था। इसी दिन से रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। गोवा और केरल में कोंकणी समुदाय इसे 'संवत्सर पड़वो' नाम से मनाता है। कर्नाटक में ये पर्व 'युगाड़ी' नाम से जाना जाता है। आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना में 'गुड़ी पड़वा' को 'उगाड़ी' नाम से मनाते हैं। कश्मीरी हिन्दू इस दिन को 'नवरेह' के तौर पर मनाते हैं। मणिपुर में यह दिन 'सजिबु नोंगमा पानबा' या 'मेइतेई चेइराओबा' कहलाता है। इस दिन चैत्र नवरात्रि भी आरंभ होती है।

नवीनता, नयापन हमारी अप्रत्याशित जिज्ञासा का हिस्सा है। और नव संवत्सर के रूप में प्रकृति हमारे स्वभाव का हिस्सा बनकर आगे आती है। नई फसल, नया कार्य हमारे अंदर नए आत्मविश्वास को भर देता है। भारतीय संस्कृति में नवीनता को इतने वैविध्यपूर्ण लिया गया है कि उसका उल्लास हमारे अंदर जमा कई तरह के मेल को बाहर निकाल देता है। नकारात्मकता, बुराइयां सबसे दूर जाने के लिए कोई ना कोई तो माध्यम चाहिए और त्यौहार इसमे हमारी बेहद मदद करते हैं। त्योहारों में ही मन पिघलते हैं, अनायास वह होने लगता है जो हमने कल्पना भी नहीं की होती है। आपसी रोष, मतभेद, मनभेद उस उल्लास में दबने लगते हैं। बाहर होती है श्रेष्ठता, आत्मीयता, आनंद।

नव वर्ष - नव संकल्प

नववर्ष विशेष

शिवप्रकाश

लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं।

भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक जीवन की समस्त विधाओं में भारत की अग्रगणीयता, आर्थिक समृद्धि,प्रकृति में वसंत अर्थात सम्यक परिवर्तन की दिशा का संदेश संपूर्ण मानवता को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा देती आई है ।भारतीय समाज में व्यैक्तिक एवं सामूहिक जीवन में उत्थान के लिए नव वर्ष पर नव संकल्प लेने की परंपरा है ।इस विक्रम संवत के आगमन पर हम हर्ष एवं उल्लास के साथ नव वर्ष का स्वागत करेंएवं भावी समाज को संरक्षित करने की दिशा में नवसंकल्प लें।

भारतीय कालगणना के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को विक्रमी संवत 2082 प्रारंभ हो रहा है। आंग्ल तिथि के अनुसार 30 मार्च रविवार का यह दिन है 7 भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक अनेक ऐतिहासिक प्रसंग चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ जुड़ें है ।पृथ्वी की उत्पत्ति के कारण पृथ्वी संवत, सृष्टि प्रारंभ दिवस के कारण सृष्टि संवत, श्रीराम जी का राज्याभिषेक, कलयुग संवत,युधिष्टिर संवत, विक्रम संवत (2082), शालिवाहनशकसंवत (1947), युगाब्द(5127), मालव संवत, गुडी पाडवा, आर्य समाज स्थापना, उगादि, गुरु अंगद देव का जन्म दिवसएवं झूलेलाल जी का अवतरण दिवस आदि सभी प्रेरणा दिवस इस शुभ दिन के साथ जुड़े है । शक्ति की उपासना के प्रतीक नवदुर्गा का प्रारंभ एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ.केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी वर्षप्रतिपदा ही है।

भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक जीवन की समस्त विधाओं में भारत की अग्रगणीयता, आर्थिक समृद्धि,प्रकृति में वसंत अर्थात सम्यक परिवर्तन की दिशा का संदेश संपूर्ण मानवता को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा देती आई है ।भारतीय समाज में व्यैक्तिक एवं सामूहिक जीवन में उत्थान के लिए नव वर्ष पर नव संकल्प लेने की परंपरा है । इस विक्रम संवत के आगमन पर हम हर्ष एवं उल्लास के साथ नव वर्ष का स्वागत करेंएवं भावी समाज को संरक्षित करने की दिशा में नवसंकल्प लें।

शारीरिक -शरीरमाध्यम्खलु धर्म साधनम्(अर्थात धर्म के साधन का मार्ग स्वस्थ शरीर ही है) भारत मेंअसावधानी के कारण हमारा खानपान स्थूल(मोटापा) शरीर का निर्माण कर रहा है , जिसके कारण अनेक रोग हमारे शरीर को अपना घर बना रहे हैं । दुनिया के देशों की तुलना में हमारे देश में गंभीर रोगों का औसत अधिक है । प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित करते हुए 'फिट इंडिया' का संदेश दिया था । नव वर्ष पर यदि हम अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या में संतुलित आहार, व्यायाम एवं योग को स्थान देंगे तब हमारा स्वास्थ्यअच्छा होगा।हमारा स्वास्थ्य ही राष्ट्र के स्वास्थ्य से जुड़ा है। इसको हम प्रतिदिन का संकल्प बनाएं।

पारिवारिक- भारतीय समाज के चिरंजीवी होने के अनेक कारणों में से महत्वपूर्ण है हमारी पारिवारिक व्यवस्था। संपूर्ण विश्व इस पारिवारिक व्यवस्था का अध्ययन एवं अनुपालन करने का प्रयास कर रहा है। परिवार के सभी सदस्यों में सामूहिकता, सुरक्षा, परस्पर प्रेम और आत्मीयता का अंकुरण होता है । परिवार टूटने के कारण ही दुनिया के देश अपने बजट का बड़ा भाग सामाजिक सुरक्षा पर खर्च कर रहे हैं । भारत में दुनिया की तुलना में यह न्यून है। हम अपने परिवार के वृद्धों को सम्मान एवं आत्मीयता दें। इसका परिणाम होगा कि नवीन पीढ़ी में भी यह संस्कार आएगा। परिवार के सदस्य सामूहिक भोजन, सामूहिक भजन एवं वर्ष में एक-दो बार विशेष प्रसंगो पर वृहद् परिवार मिलन कर पारिवारिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने का संकल्प लें ।

भाषा सीखे- विशाल भूभाग वाले अपने देश में अनेक भाषाओं एवं बोलियों का उपयोग होता है । सभी भाषाओं में एक अन्तर्निहित एकात्मता है। हम अपनी मातृभाषा के साथ-साथ एक और दूसरे प्रदेश की भाषा सीखने का प्रयास करें , जिसके कारण हम उस भाषा के साहित्य में छिपे तत्वज्ञान,महापुरुषों एवं परंपराओं को समझ सकेंगे, एवं राष्ट्र की एकात्मता वृद्धि में सहयोगी बन सकेंगे ।

नागरिक अनुशासन- देश के संविधान के प्रति आदर एवं श्रद्धा भाव, देश को सुचारू संचालित करने के लिए बनी व्यवस्थाओं का अनुपालन, देश की सम्पत्तियों का संरक्षण, नियमों का पालन,शुचिता पूर्ण कर्तव्य निष्ठ व्यवहार करने से देश में अनुशासन का भाव निर्माण होगा। यह अनुशासन ही किसी भी देश की महानता की गारंटी है । अभावग्रस्त समाज के लोगों को शिक्षा,भोजन,कार्य कुशलता निर्माण कर सेवा के माध्यम से समृद्ध करें। अपने चारो तरफ होने वाली घटनाओं के प्रति सजग रहते हुए समाज में सुरक्षितता का वातावरण बनाएं । नए-नए प्रयोगों के द्वारा रोज़गार प्रदान करते हुए भारत को आर्थिक समृद्ध कर, विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति में सहायक होना हमारा संकल्प बने ।

संयमित एवं सादगी पूर्ण जीवन शैली- पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा स्थापित सिद्धांत खर्च में संयम एवं उत्पादन में वृद्धि हम सभी के लिए मार्गदर्शक है ।आय से अधिक खर्च किसी भी समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। समाज में एक दूसरे को देखकर अधिक खर्च की प्रवृत्ति भी बढ़रही है। शादी-विवाह एवं शुभ प्रसंगों के समय बर्बाद होता भोजन यह राष्ट्र की संपत्ति का ही नुकसान है। यह दृष्टि लेकर व्यक्तिगत जीवन में सादगी एवं संयम पूर्ण व्यवहार से समाज को सम्यक दिशादें। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी अन्न की बर्बादी के संबंध में सम्पूर्ण देश को सचेत किया था।

महिला सशक्तिकरण- अपने प्राचीन धर्म ग्रंथो में माँ (स्त्री) का बड़ा श्रेष्ठ स्थान (यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः) था । कालांतर में समाज में अनेक कुप्रथाए आई। आज भी समाज में हृदय को विदीर्ण करने वाली अनेक घटनाएं होती रहती है। महिला हिंसा एवं दुर्व्यवहार को समाप्त करें। समाज में महिलाओं को समान स्थान,समान अवसर, निर्णयों में समान सहभागिता का वातावरण बनाने में हम सभी सहभागी बने।

पर्यावरण संरक्षण- महात्मा गाँधी जी का प्रसिद्ध वाक्य The Earth has enough resources for our need but not for our greed."गवादी जीवन शैली एवं प्रकृति के संसाधनों पर कब्जे की मनोवृति के कारण हमने पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ की है । जिसका परिणाम है प्रदूषण एवं तापमान में वृद्धि। अनेक विद्वानों एवं पर्यावरण केंद्रित संस्थाओं के आकड़े हमें चिंतित करने वाले है। मनुष्य का जीवन भविष्य में सुरक्षित रहेगा अथवा नहीं यह सभी की चिंता का विषय है। हम इस नव वर्ष पर अपना जीवन पर्यावरण को संरक्षित करनेवाला बनाएं, एवं जल, भोजन, वायु, वनस्पति सभी शुद्ध रहे इसका संकल्प लें ।

संस्कृति स्वाभिमान- हमारी संस्कृति त्यागमयी एवं सभी के कल्याण का विचार करने वाली है । इस कारण विश्व शांति की गारंटी भारतीय संस्कृति ही है । चैत्र शुक्ल प्रतिपदा हमको इस सांस्कृतिक गौरव का ही स्मरण कराती है । हम स्वयं एवं आने वाली पीढ़ी में अपने महापुरुषों, अपनी परंपराओं के प्रति यह गौरव के भाव को जागृत करने का संकल्प लें ।चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के उत्सव को व्यक्तिगत के साथ-साथ समाज का उत्सव बनाते हुए, हम अपने व्यक्तिगत जीवन एवं समाज जीवन में यह संकल्प ले तब नव वर्ष की सार्थकता सिद्ध होगी।

चेत्र नवरात्रि पर्व पर मटन चिकन का विक्रय प्रतिबंधित रहेगा- महापौर

देवास। नगर निगम महापौर श्रीमती गीता दुर्गेश अग्रवाल के द्वारा चेत्र नवरात्री महापर्व पर शहर व बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं की धार्मिक भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुये 30 मार्च रविवार से 6 अप्रेल रविवार राम नवमी के पर्व तक देवास शहर मे मटन चिकन, मछली, अंडे का विक्रय पूर्णत प्रतिबंधित रहेगा। महापौर ने बताया कि मॉ तुलजा भवानी एवं मॉ चामुण्डा टेकरी प्रसिद्ध तीर्थ क्षेत्र होकर नवरात्री मे शहर व शहर के बाहर से बडी संख्या मे श्रद्धालु देवास दर्शनार्थ आते हैं। इनकी भावनाओं के अनुरूप व धार्मिक महत्वों को ध्यान मे रखते हुये शहर के सम्पूर्ण मांसाहारी व्यवसायिक प्रतिष्ठान व दुकाने एवं होटलों पर मांस के विक्रय को प्रतिबंधित किया गया है। महापौर द्वारा इस हेतु नगर निगम स्वच्छता निरीक्षक हरेन्द्रसिह ठाकुर को निर्देशित किया गया है कि वे नवरात्री पर्व के दौरान मांस विक्रय की दुकानों बन्द करवाने के नोटिस जारी करें तथा आदेश के पालन का उल्लघन करने पर विभागीय कार्यवाही प्रस्तावित करें आदेश का सख्ती से पालन करवायें।

कुर्मी क्षत्रिय समाज के परिचय सम्मेलन में शामिल हुए सामाजिक लोग, एक दूसरे से साझा किए अपने विचार

सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का समय आ गया, सामूहिक विवाह सम्मेलन की सख्त जरूरत : रामखेलावन पटेल

बैतूल। बैतूलबाजार में कुर्मी क्षत्रिय समाज का युवक युवती परिचय सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमें करीब 60 युवक युवतियों का रजिस्ट्रेशन हुआ था, उनका परिचय उनके परिजनों द्वारा दिया गया और बाहर से आए सामाजिक लोगों से अपने बच्चों के विवाह के लिए चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में बड़ी तादाद में सामाजिक लोग उपस्थित रहे, साथ ही महिलाओं ने भी अपनी बढ़-चढ़कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। शुक्रवार को बैतूलबाजार के सुभाष वार्ड स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल सामुदायिक भवन में कुर्मी क्षत्रिय समाज का जिले का युवक युवती परिचय सम्मेलन संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि पूर्व राज्यमंत्री रामखेलावन पटेल प्रदेश अध्यक्ष कुर्मी क्षत्रिय समाज, विशिष्ट अतिथियों में तेज कुमार गौर, बालाजीपुरम मंदिर संस्थापक सेम वर्मा, डॉ. आर के सनोदिया एवं नगर परिषद अध्यक्ष दुर्गावती वर्मा, कुर्मी क्षत्रिय समाज जिलाध्यक्ष

संजय वर्मा द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल के छाया चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर की गई।

कार्यक्रम के दौरान मंच पर आसीन मुख्य अतिथियों का सामाजिक लोगों द्वारा पुष्पमाला से स्वागत किया गया द्य मंचीय कार्यक्रम में सबसे पहले सामाजिक कैलेण्डर का विमोचन किया गया द्य उद्बोधन कार्यक्रम में तेज कुमार गौर प्रदेश अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ कुर्मी क्षत्रिय समाज ने कहा कि समाज में बेटे-बेटियों को संस्कारवान बनाओ, पढ़ाओ- लिखाओ, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सके। शादी विवाह के बाद यदि परिवार सक्षम नहीं है तो पति पत्नी दोनो नौकरी करें और परिवार सक्षम है, तो माता पिता सोचे कि बेटी बहु से नौकरी करवाना है या नहीं, बेटियां अपना धर्म निभाएं, परिवार को संस्कारवान बनाएं। बालाजीपुरम मंदिर संस्थापक सैम वर्मा ने सबसे पहले अपने नाती ऋषि वर्मा का परिचय देते हुए कहा कि संस्कारवान बहू चाहिए, भले वह गरीब किसान की बेटी हो। समाज को मंथन करने की जरूरत है, बेटियों को संस्कारवान बनाने की, बेटे-बेटियों को आगे बढ़ाने की जरूरत है, आज का समय पति पत्नी दोनों का नौकरी करने वालों का है, पर क्या वे लोग अपने बच्चों को उचित समय और संस्कार देखरेख कर पाएंगे, ये बात समाज को सोचना होगा। परिवार को सही दिशा में आगे बढ़ाने के लिए माता पिता और बच्चों को सोचने की जरूरत है। इसी कड़ी में कुर्मी क्षत्रिय समाज के प्रदेश अध्यक्ष रामखेलावन पटेल पूर्व राज्यमंत्री ने कहा कि बैतूलबाजार में समाज द्वारा इतना बड़ा कार्यक्रम कराया गया, जोकि बहुत सराहनीय है, इस तरह से आयोजन होते रहना चाहिए, जिससे समाज में जागरूकता और आपसी सामंजस्य बनता है द्य अपने बच्चों को शिवाजी महाराज और सरदार पटेल के बताए रस्ते पर चलने के लिए प्रेरित करें, उनके विचारों को अपने जीवन में अमल करें। समाज में परिचय सम्मेलन के साथ सामूहिक विवाह कराने की भी जरूरत है, जिससे गरीब व मध्यम वर्ग के सामाजिक लोग अपने बच्चों का विवाह आसानी से कम खर्च संपन्न करा सकेंगे, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना है।

एचएमटी फैक्ट्री की सवा सात एकड़ जमीन पर बनेगी 500 फ्लैटेड इंडस्ट्रीज

उद्योग संचानालय ने जारी किए आदेश, लघु उद्योग निगम की टीम सर्वे कर जल्द तैयार करेगी प्रोजेक्ट की डिजाइन व ड्राइंग

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के कोसमी औद्योगिक क्षेत्र में इटारसी रोड पर वर्ष 1993 से खाली पड़ी एचएमटी घड़ी फैक्ट्री की लगभग सवा सात एकड़ जमीन पर फ्लैटेड इंडस्ट्रीज विकसित होने की संभावना अब प्रबल हो गई है। उद्योग संचनालय भोपाल द्वारा एचएमटी फैक्ट्री के लिए आवंटित की गई इस जमीन पर 500 नए उद्योगों के लिए फ्लैटेड इंडस्ट्रीज स्टेट विकसित करने के आदेश जारी कर दिए गए हैं और इसके लिए एस्टीमेट तैयार करने सहित अन्य आवश्यक तैयारियां भी तेज हो गई हैं। जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र के महाप्रबंधक रोहित डाबर ने बताया कि फ्लैटेड इंडस्ट्रीज प्रोजेक्ट के लिए लघु उद्योग निगम की टीम सर्वे करके ड्राइंग, डिजाइन और डीपीआर तैयार करके यह बताएगी कि यह प्रोजेक्ट कितने पार्ट में और कितने बजट में पूरा होगा। प्रारंभिक आकलन के अनुसार तकरीबन 40 करोड़ रुपये से यह प्रोजेक्ट पूरा होगा। उन्होंने बताया कि कलेक्टर से अनुमति के लिए आवेदन कर दिया गया है। जल्द ही यहां प्रोजेक्ट के अनुसार काम भी शुरू होने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1973-74 में 248 एकड़ में कोसमी इंडस्ट्रियल क्षेत्र विकसित किया गया था। इसमें से 7.25 एकड़ जमीन एचएमटी घड़ी फैक्ट्री के लिए आवंटित की गई थी। इसके बाद वर्ष 1993 में यह फैक्ट्री बंद हो गई। तब से यह भवन खंडहर ही पड़ा है।

पूर्व कलेक्टर ने किया था निरीक्षण- गौरतलब है कि लगभग चार साल पहले तत्कालीन कलेक्टर अमनबीर सिंह बैंस ने औद्योगिक क्षेत्र कोसमी का दौरा कर वहां औद्योगिक विकास की संभावनाएं तलाशी की थी। तब भ्रमण के दौरान जिला उद्योग संघ

के अध्यक्ष ब्रजआशीष पांडे, सचिव पीयूष तिवारी, उद्योगपति विवेक जवाहर शुक्ला सहित जिला उधोग संघ के अन्य पदाधिकारियों ने एचएमटी फैक्ट्री की जमीन पर भविष्य में फ्लैटेड इंडस्ट्रीज स्टेट विकसित करने का सुझाव कलेकटर को दिया था, इसके बाद जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र ने यहां फ्लैटेड इंडस्ट्रीज स्टेट के लिए प्रस्ताव उधोग संचनालय भोपाल को भेजा था। लेकिन 40 करोड़ का बजट एक साथ न मिलने के कारण यह प्रोजेक्ट कई वर्षो से अटका पडा था। अब उद्योग संचालनालय ने इसे पूरा करने के आदेश दिए हैं। पुराने एचएमटी फैक्ट्री के खंडहर बन गए भवन को तोडकर यहां फ्लैटेड इंडस्ट्रीज का तीन फ्लोर का नया भवन बनाया जाएगा, जिसमें बड़ी इंडस्ट्रीज के लिए हॉल और छोटे व मध्यम उद्योगों के लिए कमरे बनेंगे। छोटे उद्योगों के लिए 400 से 600 वर्ग फीट के भवन तैयार होंगे।

महिला उद्यमियों के लिए होगा एक तल- जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष ब्रजआशीष पांडे ने बताया कि हमने प्रशासन को सुझाव दिया है कि इसमें एक फ्लोर महिला उधमियों के लिए आरक्षित रखा जाये। संघ के उद्योगपति विवेक जवाहर शुक्ला ने बताया कि चूँकि हमारे इंडस्ट्रियल एरिया में छोटे-छोटे इंडस्ट्रीज (बच्चा उद्योग) अधिक है और उन्हें आउटलेट या रिटेल काउंटर की जरूरत होती है, अत- उन्हें इससे बहुत फायदा मिलेगा। इसके अलावा इस फ्लैटेड इंडस्ट्रीज एरिया में उद्योग शुरू करने के लिए इच्छुक उद्यमियों को बैंक से ऋण भी आसानी से मिल जाता है। जिला उद्योग संघ के पदाधिकारी का कहना है, यह प्रोजेक्ट कई वर्षों से अधर में लटका हुआ है, अब इसे जल्दी ही पूर्ण करना चाहिए, जिससे हमारे जिले के हजारों लोगों को रोजगार मिल सके।

क्या है फ्लैटेड इंडस्ट्री- उल्लेखनीय है कि फ्लेटेड इंडस्ट्रियल स्टेट में अलग-अलग उद्योग न होकर एक ही मल्टी फ्लेटनुमा भवन में छोटे-छोटे उद्योग होते हैं। बहुमंजिला भवन में कमरों में ऐसी इकाइयां संचालित होती हैं जिन्हें कम जगह लगती है और भारी बुनियादी ढांचे या मशीनरी की जरुरत नहीं पड़ती। इसमें प्रिंटिंग, रिफिल, पेन-पेंसिल, प्लास्टिक के ढक्कन, बोतल, कप, बेकरी आइटम नमकीन, खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रोसेसिंग) अगरबत्ती, फर्नीचर के छोटे-छोटे काम सहित इलेक्ट्रिक के छोटे-छोटे सामान बनाए जा सकते हैं। इन उद्योगों को केवल कवर्ड एरिया भर लगता है। जगह की कमी होने के कारण महानगरों में फ्लेटेड इंडस्ट्रियल स्टेट ही अधिक स्थापित हो रहे हैं। उद्योग विभाग ने एचएमटी कंपनी से मिली इस जमीन पर फ्लैटेड इंडस्ट्रीज विकसित करने का प्रस्ताव तैयार कर लिया है और प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

दो हजार लोगों को मिलेगा रोजगार- प्रत्येक औद्योगिक इकाई में 5 से 7 लोगों को रोजगार मिलेगा। इस तरह लगभग 2 हजार लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिल सकेगा। इसके अलावा अप्रत्यक्ष रूप से भी हजारों लोग लाभान्वित होंगे। हर साल जिले में लगभग 18 हजार युवा रोजगार के लिए पंजीयन करवाते हैं। जिनमें से अधिकतर को अपने ही जिले में रोजगार नहीं मिल पाता है। उन्हें बड़े शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है। इस प्रोजेक्ट से ऐसे बेरोजगारों को फायदा होगा।

इनका कहना है -

फ्लैटेड इंडस्ट्रीज विकसित करने के आदेश उद्योग संचालनालय भोपाल से मिले हैं। लघु उद्योग निगम की टीम सर्वे करके ड्राइंग, डिजाइन और डीपीआर तैयार करके बताएगी कि यह कितने पार्ट में पूरा होगा। अब प्रपोजल बनाकर कलेक्टर के माध्यम से भेज रहे हैं और एस्टीमेट तैयार किया जा रहा है। लगभग 40 करोड़ की लागत से यह प्रोजेक्ट पूरा होगा, इसमें लगभग 500 औद्योगिक इकाइयां स्थापित होंगी।

-रोहित डाबर,
महाप्रबंधक, जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र बैतूल

झूलेलाल जयंती आज, होंगे विभिन्न कार्यक्रम

निकलेगी शोभायात्रा, लगेगा ब्लड डोनेशन कैंप

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के तत्वाधान में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी आज रविवार 30 मार्च को भगवान झूलेलाल की जयंती चेट्रीचंड्र का पर्व धूमधाम एवं हर्षोल्लास से सामाजिक बंधु-बांधव द्वारा मनाया जाएगा। इस अवसर पर बैतूल शहर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

सर्वप्रथम सुबह 9 बजे झूलेलाल मंदिर मोहन कॉलोनी सिविल लाइन में महाआरती होगी, जिसके पश्चात प्रात- 10 बजे युवाओं द्वारा वाहन रैली मोहन कॉलोनी से निकाली जाएगी, जो कि कोठीबाजार, गंज, बडोरा आदि स्थानों से होते हुए रामकृष्ण बगिया सिविल लाइन में आकर संपन्न होगी। तत्पश्चात रामकृष्ण बगिया में दोपहर 1 बजे से समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह होगा तथा लंगर प्रसादी एवं भंडारा का कार्यक्रम आयोजित होगा। फिर शाम 5 बजे से भगवान झूलेलाल की भव्य प्रतिमा की शोभायात्रा निकाली जाएगी, जो कि शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए भग्गूढाना के माचना एनीकट पर संपन्न होगी। इसी दौरान सुबह 10 बजे से दोपहर 4 बजे तक रामकृष्ण बगिया सिविल लाइन में ब्लड डोनेट कैंप का भी आयोजन किया गया है। पूज्य सिंधी पंचायत के अध्यक्ष नरेंद्र हिरानी (काकाजी) एवं सचिव गजानन (बंटी) मोटवानी सहित अन्य पदाधिकारियों ने समाज के सभी प्रबुद्धजनों, अन्य सामाजिक संगठनों एवं शहर के गणमान्य नागरिकों से कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की है।

कलेक्टर ने माताजी की टेकरी पहुंचकर चैत्र नवरात्रि पर्व की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

नवरात्रि पर्व में श्रद्धालुओं के सुगमता एवं अच्छे से दर्शन हों इसका विशेष ध्यान रखें

देवास। चैत्र नवरात्रि पर्व रविवार 30 मार्च से प्रारंभ हो रहे हैं। नवरात्रि पर्व के दृष्टिगत जिला प्रशासन द्वारा व्यापक तौर पर व्यवस्थाओं/तैयारियां की गई। कलेक्टर श्री ऋषुराज सिंह ने माताजी की टेकरी पहुंचकर चैत्र नवरात्रि पर्व की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने टेकरी क्षेत्र का भ्रमण कर सभी व्यवस्थाओं की जानकारी ली तथा आवश्यक दिशा निर्देश अधिकारियों को दिए। इस दौरान अपर कलेक्टर श्री बिहारी सिंह, नायब तहसीलदार सुश्री निधि राजपूत सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि गर्मी का मौसम है, इसलिए पानी की जरूरत ज्यादा रहती है। टेकरी परिसर क्षेत्र में श्रद्धालुओं के लिये पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था रहे।

उन्होंने निर्देश दिए कि टेकरी परिसर में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार कि

असुविधा ना हो। दर्शनार्थियों को माताजी के दर्शन सुगमता और अच्छे से हों इसका विशेष ध्यान रखें। कलेक्टर श्री सिंह ने नवरात्रि के दौरान अलांउन्समेंट सिस्टम, खोया-पाया काउण्टर सुचारू चलाए जाने के निर्देश दिए। टेकरी पर ऑनलाइन दान के लिए अतिरिक्त क्यू आर कोड के फ्लेक्स लगाये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने टेकरी परिसर क्षेत्र में साफ-सफाई आदि व्यवस्थाओं के सुचारू संचालन के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री सिंह ने निर्देश दिए

अंतराज्यीय करोड़ो रूपयों की धोखाधडी करने वाले बंटी-बबली को किया पुलिस ने गिरफ्तार

देवास। पुलिस अधीक्षक श्री पुनीत गहलोत द्वारा चलाए जा रहे ऑपरेशन हवालात केद तहत फरार स्थाई वारण्टीयो की शीघ्र गिरफ्तारी कर वारण्ट तामिली हेतू निर्देशित किया गया था । पुलिस अधीक्षक देवास के निर्देशन में तथा अति. पुलिस अधीक्षक जयवीर सिंह भदोरिया एवं नगर पुलिस अधीक्षक दीशेष अग्रवाल के मार्गदर्शन में थाना कोतवाली एवं जिला स्तरीय सायबर टीम गठित कर 07 वर्षो से फरार स्थाई वारण्टी सचिन पिता शंकर सिंह सिसोदिया निवासी 313 बाहेती कॉलोनी बडवाह, रीमा सिसोदिया पति सचिन सिसोदयिा निवासी सदर की तलाश हेतू बडोदरा गुजरात भेजा गया था ।

पुलिस टीम द्वारा अथक मेहनत व प्रयास से 07 वर्षो से फरार अलग-अलग जिलो के 09

थानो के वांटेड आरोपी सचिन एवं उसकी पत्नि रीमा सिसोदिया जो नाम बदलकर तथा अपनी पहचान छिपाकर रहने के संबध में जानकारी एकत्रित कर उनके वर्तमान निवास स्थान वडोदरा, गुजरात से गिरफ्तार किया जाकर थाना लाया गया जिनसे प्रथक-प्रथक अपराध के संबध मे पूछताछ करने पर उनके द्वारा करीबन 8.5 करोड रूपये उक्त आरोपीगण तथा उनके साथीगणो द्वारा धोखाधडी करना बताई गई शेष पूछताछ जारी है तथा उक्त आरोपीगणों के संबध में अन्य थानो से संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा रही है।

आरोपीयो द्वारा इंदौर की कंपनी जो की मेगा मांइड ट्रेकिंग कंसलटंसी साप्टेक प्रा.लि.के नाम से थी उसकी लुकचुप एप्लिकेशन जो की सोशल मिडिया फेसबुक, इंस्टाग्राम जेसा होकर उसे आपरेट करने व उसका प्रमोशन करने हेतु फेंचायसी देकर अलग-अलग जिला एवं राज्यो काम करने हेतु प्रलोभन देकर लगभग 8.5 करोड रूपये की धोखाधडी की।

न्यायालय नायब तहसीदार, तहसील कोलार, जिला भोपाल

प्रकरण क्रमांक 5344/अ-6/2024-25

:: उद्घोषणा पत्र ::

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है आवेदक सुमन सिंह पत्नि श्री श्याम सिंह निवासी होशंगाबाद रोड म.प्र.भू.रा. संहिता 1959 की धारा 109, 110 के अंतर्गत आवेदन पत्र प्रस्तुत कर रजिस्टर्ड विक्रय एवं फौती नामांतरण के आधार पर नामांतरण हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। ग्राम लहारपुर प.ह.नं. स्थित भूमि खसरा नंबर 112/1, 112/2 व अन्य रकबा भूमि का नामांतरण राजस्व अभिलेखों में आवदेक के नाम पर किये जाने का अनुरोध किया है। उक्त संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह 15 दिवस के अंदर इससे पूर्व इस न्यायालय में उपस्थित होकर पेश कर सकता है। समयावधि पश्चात प्रस्तुत किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

उक्त उदघोषणा पत्र मेरे द्वारा न्यायालय की पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से आज दिनांक 26/3/2025 को जारी किया गया।

नायब तहसीलदार
तहसील-कोलार भोपाल

कितनी सच है गोविंदा की नई प्रेम कहानी

मशहूर अभिनेता गोविंदा अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर एक बार फिर चर्चा में हैं। गोविंदा और उनकी पत्नी सुनीता आहूजा के बीच मतभेद चल रहे हैं, और दोनों के तलाक लेने की खबरें सामने आ रही हैं। हालांकि, अभी तक इन खबरों की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई। अफवाह है कि गोविंदा का 30 साल की एक मराठी एक्ट्रेस के साथ अफेयर चल रहा है। हालांकि, इस दावे की अभी कोई पुष्टि नहीं हुई है। जब गोविंदा से इस बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने सीधे तौर पर कुछ भी स्वीकार नहीं किया।

अभिनेता गोविंदा और सुनीता आहूजा खूब लाइमलाइट बटोर रहे हैं। बीते दिनों दोनों के तलाक की खबरें सामने आई थीं। दावा किया जा रहा है कि गोविंदा का अफेयर एक मराठी एक्ट्रेस के साथ चल रहा है और वह एक्ट्रेस गोविंदा से 31 साल छोटी है। इतना ही नहीं, रिपोर्ट्स में ये भी कहा गया कि इस एक्ट्रेस के वजह से ही गोविंदा और सुनीता के बीच खूब झगड़े भी हुए हैं और इसी वजह से बात तलाक तक पहुंची। इन सब रिपोर्ट के बीच अब गोविंदा के भांजे विनय आनंद ने सब कुछ साफ कर दिया और सारी सच्चाई बताई!

गोविंदा के भांजे विनय आनंद ने एक पोस्ट पोस्ट में एक्टर के अफेयर की खबरों पर बयान दिया। उन्होंने पहले हो ऐसी खबरों पर हैरानी जताई और खुद ही सवाल कर लिया ही ऐसी चीजें आती कहां से हैं? विनय ने पॉडकास्ट में कहा कि अगर मामा की जिंदगी में कोई हसीना होती तो मैं वो उसे हमसे मिलवाते जरूर। उनकी जिंदगी में ऐसी कोई लड़की नहीं है, जो खबरों में बताई जा रही है। मैं यही कहूंगा कि लोग ऐसी बातें न करें। विनय यहीं नहीं रुका। उन्होंने अपनी बात को आगे जारी रखते हुए कहा कि कभी कभी गलतफहमी हो जाती है।

सुपरस्टार्स कई दफा ऐसी अफवाहों के शिकार हो जाते हैं मैं मामी को भी गलत नहीं मानता हूं। लेकिन, ऐसा होता है कि कई बार आपके दिमाग में कोई बात घर कर जाती है. मैं बस दुआ करूंगा कि मामा-मामी के बीच में सब कुछ जल्दी ठीक हो जाए. मामा मेरे पिता समान हैं, मैं उन्हें जानता हूं कि वो ऐसी चीजों से कोसों दूर रहते हैं। तलाक की अफवाहों पर सुनीता आहूजा ने भी चुप्पी तोड़ी थी। उन्होंने एक बार मीडिया के बीच स्पॉट होते हुए गोविंदा संग तलाक की खबरों पर अपना रिएक्शन दिया था। उन्होंने कम शब्दों में ये समझा दिया था कि उनसे गोविंदा को कोई अलग नहीं कर सकता। उन्होंने कहा था कि हमको मेरे को और गोविंदा को इस दुनिया में अगर कोई माई का लाल हमें अलग कर दे तो सामने आकर दिखाए। उनका ये बयान काफी वायरल हुआ था।

गोविंदा और सुनीता आहूजा 37 साल की शादी के बाद तलाक लेने जा रहे हैं। रिपोर्ट में ये भी कहा गया है कि गोविंदा का एक 30 साल की मराठी एक्ट्रेस के साथ अफेयर चल रहा है कि जिसकी वजह से उनका सुनीता से तलाक हो सकता है। इसी बीच गोविंदा और उनकी पत्नी सुनीता आहुजा के रिश्तेदारों के बयान सामने आ रहे हैं। गोविंदा के भांजे कृष्णा अभिषेक ने मामा-मामी के तलाक पर बयान देते हुए इन रूमर्स को सिरे से खारिज किया है। कृष्णा अभिषेक ने तलाक के दावों पर कहा है- ऐसा नहीं हो सकताहै। वो तलाक नहीं लेंगे।

अब कृष्णा अभिषेक की बहन यानी एक्ट्रेस आरती सिंह ने भी मामा-मामी के अलग होने की बात को लेकर अपना बयान दिया है। आरती सिंह ने मीडिया को बताया है कि मामा-मामी के तलाक की अफवाह बेबुनियाद हैं। आरती सिंह ने बताया है कि इस वक्त वो मुंबई में नहीं हैं। वो किसी से भी टच में नहीं हैं। हालांकि, आरती ने ये साफ कहा है कि तलाक की खबरें एकदम झूठी हैं। आरती सिंह का दावा है कि ये सिर्फ अटकले हैं, क्योंकि उनका रिश्ता बहुत मजबूत है।

गोविंदा की भांजी आरती सिंह ने कहा है कि उनके मामा-मामी ने इतने सालों में अपने रिश्ते में इतना प्यार भरा है और इसे इतना स्ट्रांग बनाया है कि वो तलाक ले ही नहीं सकते हैं। एक्ट्रेस ने इन रूमर्स को एकदम गलत बताया है। गोविंदा की शादी टूटने की अफवाह इसलिए उड़ रही है, क्योंकि उनकी पत्नी सुनीता ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा था कि वो और उनके पति गोविंदा अलग-अलग घर में रहते हैं। इसके अलावा वैलेंटाइन डे पर सुनीता पति गोविंदा के साथ नहीं बल्कि अपने बेटे के साथ नजर आई थीं।

45 साल की उम्र में बिजनेसमैन के दामाद बनेंगे

साउथ सुपरस्टार प्रभास 45 साल के हो चुके हैं, लेकिन अब तक कुंवारे हैं। अभिनेता लंबे समय से अपनी फिल्मों में बिजी हैं, लेकिन इस बीच उनका नाम कई हसीनाओं के साथ जुड़ा। प्रभास से कई बार उनकी शादी पर सवाल किया गया है। अब लगता है कि एक्टर दूल्हे राजा बनने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक मीडिया रिपोर्ट सामने आई है, जिसमें प्रभास की शादी का जिक्र किया गया। बताया गया है कि एक्टर के परिवार ने उनका रिश्ता पक्का कर दिया है।

इस रिपोर्ट में दावा किया गया कि प्रभास का परिवार उनकी जल्द से जल्द शादी करवाना चाहता है। वे सीरियस होकर उनके लिए लड़की की तलाश कर रहा था। अब उन्हें लड़की भी मिल गई है, जिस वजह से वह प्रभास की जल्द से जल्द शादी करवाना चाहते हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि प्रभास के लिए उनके मां-पापा ने हैदराबाद

के एक बिजनेसमैन की बेटी के साथ रिश्ता पक्का किया है। अब एक्टर के परिवार के लोग शादी की तैयारियों में भी जुट गए हैं। प्रभास के लिए जिस लड़की को पसंद किया गया, उस लड़की से जुड़ी कोई जानकारी सामने नहीं आई है और न रिपोर्ट पर कोई रिएक्शन सामने आई है। ऐसे में फैंस अब सिर्फ परिवार की पुष्टि का इंतजार कर रहे हैं।

प्रभास का नाम सबसे पहले एक्ट्रेस अनुष्का शेट्टी के साथ जुड़ा था। दोनों ही फिल्म बाहुबली में साथ नजर आए। दावा किया गया कि इस फिल्म की शूटिंग के दौरान ही दोनों ने अपनी डेटिंग लाइफ को शुरू किया। दोनों का रिश्ता शादी की खबरों तक भी पहुंच गया, लेकिन अचानक ही दोनों के ब्रेकअप की खबरें सामने आईं। इसके बाद प्रभास का नाम कृति सेनॉन के साथ जुड़ा। दोनों ही फिल्म आदिपुरुष में साथ नजर आए थे। कई रिपोर्ट्स में दावा भी किया गया था कि कृति और प्रभास सगाई करने वाले हैं, लेकिन ये महज अफवाह निकली।

रियल बॉक्स

परदे पर पति-पत्नी के नाजुक रिश्ते के कई रंग

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

यदि यह सवाल किया जाए कि सिनेमा के दर्शकों ने सबसे ज्यादा किन विषयों पर बनी फिल्मों को पसंद किया, तो दो ही विषय ऐसे हैं जिनसे कोई असहमत नहीं होगा। प्यार-मोहब्बत और पति-पत्नी के रिश्तों पर बनी फ़िल्में जीवन से जुड़े ऐसे विषय माने जा सकते हैं, जिसके कथानकों में विविधता की कमी नहीं है। सबसे ज्यादा जीवंतता पति-पत्नी के संबंधों वाली कहानियों में है। क्योंकि, इसमें कई रंग हैं। रिश्तों के इन कथानकों को कई फिल्मों में अलग-अलग तरीके से फिल्माया गया। कभी पति-पत्नी के रिश्ते गलतफहमी के शिकार हुए, कभी इन दोनों के बीच किसी तीसरे की मौजूदगी के कथानक गढ़े गए तो इस नाजुक रिश्ते में परिवार के दखल ने विवाद करवाया। तलाक की घटनाओं ने भी इस रिश्ते को हमेशा प्रभावित किया है। परदे पर यह विषय कभी पुराना नहीं हुआ। इस विषय पर सबसे सशक्त फिल्म 1982 में आई महेश भट्ट की 'अर्थ' मानी जाती है। इसमें शबाना आज़मी, कुलभूषण खरबंदा, स्मिता पाटिल और राज किरण मुख्य भूमिकाओं में थे।

गुलजार की फिल्म 'आंधी' की कहानी भी पति-पत्नी के रिश्तों की ही कहानी कहती थी। इसके कथानक पर विवाद भी हुआ और फिल्म को सेंसर में लंबे समय तक जूझना पड़ा। इसे राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ और पति-पत्नी के रिश्तों पर ज्ञात फिल्मों में से एक के रूप में याद किया जाता है। इसके बाद 80 से 2000 तक के दो दशकों में पहेली, चलते-चलते और 'साथिया' जैसी कई फिल्में बनी, जो स्त्री और पुरुष के संबंधों के सदियों पुराने विषय पर आधारित आधुनिक फिल्में थीं। पति और पत्नी के संबंधों पर कई तरह की प्रयोगात्मक फिल्में बनी। इनमें कुछ चर्चित फिल्में हैं तनु वेड्स मनु, रब ने बना दी जोड़ी, नमस्ते लंदन, साथिया, शादी के साइड इफेक्ट्स, चलते चलते, दम लगा के हईशा कभी अलविदा ना कहना, गहराइयां, मेरे हसबैंड की बीवी और 'सिलसिला।' इसमें 'तनु वेड्स मनु' एक रोमांटिक कॉमेडी है जिसमें जोड़े की प्रेम कहानी को दिखाया गया है। शाहरुख़ खान और अनुष्का शर्मा की फिल्म 'रब ने बना दी जोड़ी' पति-पत्नी के रिश्तों की ऐसी कहानी है, जिसमें दिखाया गया कि दोनों कैसे एक-दूसरे के लिए बने होते हैं।

एक भारतीय लड़के और लंदन की लड़की की प्रेम कहानी पर बनी 'नमस्ते लंदन' भी ऐसी ही फिल्म है, जिसकी कहानी अनोखी है। 'साथिया' एक ऐसे जोड़े की कहानी है, जो घर से भागकर शादी करते हैं। ऐसी फिल्मों के बीच एक नया प्रयोग 'शादी के साइड इफेक्ट्स' में हुआ। यह फिल्म एक ऐसे पति-पत्नी का कथानक है, जो अपनी शादी की उलझनों में ही उलझे होते हैं। ऐसे विषयों में 'दम लगा के हईशा' का कथानक बिल्कुल नया है, जो मोटी पत्नी और दुबले पति की कहानी है। ये काफी लड़ाई करते हैं, लेकिन अंत में नाटकीय घटना की वजह से एक हो जाते हैं। इस विषय पर यश चोपड़ा ने 'सिलसिला' बनाई जिसे अमिताभ बच्चन, रेखा और जया भादुड़ी की कुछ हद तक सच्ची कहानी बताई जाती है। इसमें रिश्तों में शक का तड़का भी लगाया था। शाहरुख खान, प्रीति जिंटा, रानी मुखर्जी और अभिषेक बच्चन की फिल्म 'कभी अलविदा ना कहना' में माया (रानी मुखर्जी) और देव (शाहरुख खान) अपनी-अपनी शादी से तंग आ चुके थे। इस बीच हालात बदलते हैं और दोनों एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं। प्यार, धोखा और एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर पर बनी फिल्म 'गहराइयां' भी बहुत कुछ कहती है। ऐसी ही एक फिल्म 'मेरे हसबैंड की बीवी' है जो पति-पत्नी के रिश्ते पर आधारित है।

पति-पत्नी का रिश्ता पवित्र और प्रेम से भरा होता है। पर, कई बार यह रिश्ता गलतफहमी और विश्वास की कमी से कमजोर हो जाता है। झगड़े बढ़ते हैं और बात तलाक तक पहुंच जाती है। निर्देशकों ने इसे अपने-अपने तरीके से भुनाया। 'तलाक' (1958) पति-पत्नी के बीच हुई गलतफहमी पर बनी पहली फिल्म थी। ये महेश कौल द्वारा निर्देशित राजेंद्र कुमार की बतौर हीरो पहली फिल्म थी। इसमें कामिनी कदम की मुख्य भूमिका थी। इसी शीर्षक पर आधारित कई फिल्में बनी, जैसे 'तलाक तलाक तलाक!' बीआर चोपड़ा जैसे फिल्मकार ने 'निकाह और 'पति पत्नी और वो' जैसी फिल्में बनाई। लेकिन, उन्होंने कुछ फिल्मों के कथानक में कॉमेडी का टच भी रखा। ऐसे रिश्तों में खटास वाली फिल्मों में ऋषिकेश मुखर्जी की 'अभिमान' भी है। पत्नी की सफलता से ईर्ष्या करने वाले पति पर अमिताभ और जया की फिल्म 'अभिमान' को आज भी पसंद किया जाता है। जब गायन में पत्नी उमा अपने पति सुबीर से अधिक सफल हो जाती है। जल्दी ही पत्नी स्टार सिंगर बन जाती है, जिससे पति के अहंकार को ठेस लगती है। रिश्तों के उतार-चढ़ाव पर आधारित फिल्म 'अभिमान' में अमिताभ बच्चन की भूमिका उनके करियर की सबसे बेहतरीन भूमिका रही।

अजीज मिर्जा द्वारा निर्देशित 'चलते-चलते' (2003) में शाहरुख खान और रानी मुखर्जी मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म प्रेमी-प्रेमिका के पति-पत्नी बनने से लेकर उनके बीच गलतफहमी से उपजे विवाद की कहानी पर आधारित है। दोनों में विवाद इस हद तक बढ़ जाता है, कि वे अलग हो जाते हैं, लेकिन अंत में प्यार की जीत होती है। 2005 में आई 'मैं, मेरी पत्नी और वो' फिल्म शादी से पहले रंग-रूप और कद-काठी को लेकर समाज में फैले भ्रम पर है। फिल्म में मिडिल क्लास इंडियंस की मानसिकता को खूबसूरती से दिखाया है। आनंद एल राय निर्देशित 'तनु वेड्स मनु रिटर्न्स' (2015) रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में आर माधवन और कंगना रनौत थे। यह फिल्म शादी के चार साल बाद के तनु और मनु के रिश्तों पर है। दोनों के बीच बनती नहीं है और हर बात पर झगड़ा होता है, इसलिए दोनों तलाक ले लेते हैं। इसके बाद मनु, तनु की हमशक्ल कुसुम के प्यार में पड़ जाता है और कहानी नई दिशा में मुड़ जाती है। दक्षिण में बनी कुछ हिंदी फिल्में जैसे 'जुदाई' और 'एक ही भूल' भी इसी तरह के विषय पर आधारित थीं। 70 के दशक में आप की कसम, थोड़ी-सी बेवफाई और अगर तुम ना होते' जैसी फिल्में बनी जो इस संवेदनशील विषय के साथ न्याय करने में सफल रहीं।

इस रिश्ते का सबसे कमजोर पक्ष है धोखा, जिसके पीछे कई कारण छुपे होते हैं। एक्स्ट्रा मैरिटल रिलेशन को लेकर फ़िल्में बनी है। सलमान खान, करिश्मा कपूर और सुष्मिता सेन की फिल्म 'बीवी नंबर 1' में भी एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर का तड़का है। कहानी में ड्रामा के साथ कॉमेडी भी है। अक्षय कुमार, इलियाना डिक्रूज की फिल्म 'रुस्तम' प्यार में धोखे की सच्ची कहानी पर बनी है। इसकी कहानी एक नेवी ऑफिसर के इर्द-गिर्द घूमती है। उसे अपनी पत्नी के एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर के बारे में पता चलता है। इसके बाद, नेवी ऑफिसर उस शख्स का कत्ल कर देता है। यह फिल्म सिर्फ पति-पत्नी का रिश्ता ही नहीं, देश भक्ति भी दिखाती है। दीपिका पादुकोण, अनन्या पांडे, सिद्धांत चतुर्वेदी और धैर्या कारवा की फिल्म 'गहराइयां' (2022) में भी प्यार नहीं, बल्कि धोखा और एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर पर बनी है। विद्या बालन, इलियाना डीक्रूज और प्रतीक गांधी की फिल्म 'दो और दो प्यार' में भी रिश्तों की उलझन दिखाई गई। फिल्म की कहानी में एक कपल के बीच खूब उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है, जिसकी वजह से दोनों का एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर शुरू हो जाता है। अनन्या पांडे, भूमि पेडनेकर और कार्तिक आर्यन की फिल्म 'पति, पत्नी और वो' की कहानी भी प्यार में धोखे और फरेब पर है। कहानी में ट्विस्ट तब आता है, जब युवक की पत्नी और गर्लफ्रेंड को उसके धोखे के बारे में पता लगता है। ऐसे ही विषय पर बनी तापसी पन्नू और विक्रांत मैसी की फिल्म 'हसीन दिलरुबा' को पसंद किया गया। यह फिल्म प्यार लव और धोखे को नए कलेवर के साथ दिखाती है।

पति-पत्नी के रिश्तों में दर्द और धोखे पर भी कम फ़िल्में नहीं बनी। रानी मुखर्जी की डेब्यू फिल्म 'राजा की आएगी बारात' (1997) की कहानी ऐसे आदमी की कहानी है, जो एक लड़की का रेप सिर्फ इसलिए करता है। क्योंकि, उसने उसे थप्पड़ मार दिया था। बाद में कोर्ट में फैसला करती है कि रेपिस्ट को लड़की से शादी करनी चाहिए और उसे स्वीकार करना चाहिए। फिल्म 'मेहंदी' (1998) की कहानी पूजा (रानी मुखर्जी) की है, जो पति से बेहद प्यार करती है। जब लड़के के परिवार को दहेज नहीं मिलता, तो वे पूजा को इतना टॉर्चर करते हैं कि उसे मारने की प्लानिंग कर लेते हैं। 2001 में आई फिल्म 'दामन' की कहानी शादी के सबसे भयानक पहलू के इर्द-गिर्द है जिसमें मैरिटल रेप भी शामिल है। इसमें रवीना टंडन की जिंदगी उसका पति सयाजी शिंदे नर्क बना देता है। डोमेस्टिक वॉयलेंस पर बनी फिल्मों में से 'प्रोवोक्ड' (2006) को काफी बेहतरीन माना जाता है। ऐश्वर्या राय, नवीन एंड्रयूज मिरांडा रिचर्डस, नंदिता दास की यह फिल्म करनजीत अहलूवालिया की रियल लाइफ स्टोरी पर बेस्ड है जिन्होंने अपने पति से 10 साल यातनाएं सहीं। फिर परेशान होकर उसे मार दिया। ऐसी फिल्मों में अनुभव सिन्हा की 'थप्पड़' (2020) भी है, इसमें तापसी पन्नू के काम की सराहना हुई। ये पति के थप्पड़ से आहत पत्नी की कहानी है, जो पति से लड़ने का फैसला लेती है। फिल्म सवाल उठाती है कि क्या पुरुष और स्त्री के बीच बराबरी का रिश्ता है!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

भाषा विवाद के दौर में 'शोले' का जिक्र!

अशोक जोशी

देश के दक्षिणी भाग में भाषा का भूत फिर से कब्र से उठ खडा हुआ है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री समेत तमाम नेता केन्द्र सरकार के त्रिभाषा फार्मूले को अमान्य कर हिंदी के विरोध में राग

अलाप रहे हैं। देश की सर्वोच्च संस्था में भी गत दिनों यही सुर उभरे, जिन्हें केन्द्र सरकार ने यह कहकर ठंडा कर दिया कि त्रिभाषा को अपनाने का यह मतलब कदापि नहीं है कि वहां हिंदी थोपी जा रही है। जबकि, हिंदी विरोधियों को 'शोले' देखना चाहिए, जो कई भाषाओं का संगम है।

राजनीति में भाषाई विवाद खड़े करने की परंपरा पुरानी हैं। लेकिन, अब समय बदल गया। हिन्दी की प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय फिल्में देश ही नहीं विदेशों की स्थानीय भाषाओं में डब कर वहां न केवल प्रदर्शित की जाती हैं, बल्कि सफल भी होती है। ऐसी ही कुछ कहानी दक्षिण भारत की फिल्मों की हैं जो वहां की स्थानीय भाषाओं में बनती है और सफल होने के बाद जब उनके हिन्दी संस्करण देश के गैर दक्षिण भारत हिस्सों में प्रदर्शित की जाती हैं तो उनका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन मूल भाषा के कलेक्शन से कहीं ज्यादा होता है।

बाहुबली हो चाहे पुष्पा या आरआरआर सभी के हिन्दी संस्करणों ने दक्षिण भारत के फिल्मकारों की झोलियां लबालब करने का काम किया है। ऐसे में पैसा अंटी कर हिन्दी का विरोध कुछ जंचता नहीं है। देखा जाए तो फिल्म कला और संस्कृति की प्रस्तुति का एक माध्यम है जिसमें भाषा कहीं आड़े नहीं आती। उलटे फिल्में भाषाई राजदूत का दायित्व ही ज्यादा निभाती हैं। ऐसे में यदि फिल्मों को राष्ट्रीय एकता का माध्यम कहा जाए तो किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। एक तरह से फिल्में राष्ट्रीय एकता की कड़ी है जो पूरब को पश्चिम से और उत्तर को दक्षिण से जोड़ने का काम करती है। इनमें भी हिंदी फिल्मों का रुतबा सबसे अलहदा है जो न केवल देश को बल्कि सारी दुनिया को दशकों से जोड़ने में कामयाब रही हैं।

हिंदी फिल्मों ने हमेशा देश के विभिन्न प्रांतों के लोगों को जोड़ने का काम किया है। एक जमाना वो था जब दक्षिण भारत की ज्यादातर फिल्मों के नायक हिन्दी भाषी होते थे और हिन्दी फिल्मों की ज्यादातर नायिकाएं दक्षिण भारत से ही आती थी। तब किसी के दिमाग में हिंदी थोपने का विचार तक नहीं आता था। वास्तव में देखा जाए तो राजेन्द्र कुमार, सुनील दत्त, जितेंद्र, राजेश खन्ना के साथ साथ वैजयंती माला, बी सरोजा देवी, जमुना, हेमा

मालिनी, रेखा, जया प्रदा, पद्मिनी, रागिनी और श्रीदेवी ने हिन्दी को उत्तर से दक्षिण तक जोड़ने का काम किया।

जो लोग भाषाई विवाद की बात करते हैं उन्हें जीपी सिप्पी की फिल्म 'शोले' को देखना चाहिए।

यहां आशय फिल्म शोले को पर्दे पर देखने की बात नही है क्योंकि देश के लगभग सभी दर्शकां ने इस ब्लॉक बस्टर को बार बार देखा है। गौर से देखा जाए तो शोले फिल्म राष्ट्रीय एकता का बेमिसाल नमूना है। कुछ लोगों को इस बात से आश्चर्य हो सकता है । लेकिन यह निर्विवाद रूप से सच है कि शोले के फिल्मकारों, कलाकारों और तकनीशियनों पर एक नजर डाली जाए तो हम पाते हैं कि यह अनेकता में एकता का एक सुंदर उदाहरण है जो किसी पुष्पगुच्छ की तरह सुशोभित हो रहा है।

संभवतः शोले एकमात्र फिल्म होगी जिसमें पूरा भारत उतर आया। फिल्म के निर्माता जी कांपी सिप्पी और निर्देशक रमेश सिप्पी पंजाबी भाषी हैं। लेखक द्वय सलीम और जावेद मध्य भारत के उर्दू भाषी। फिल्म के एक नायक धर्मेन्द्र पंजाबी भाषी हैं तो दूसरे नायक अमिताभ बच्चन उत्तर भारत के शुद्ध हिन्दी भाषी। फिल्म में ठाकुर की जबरदस्त भूमिका करने वाले संजीव कुमार गुजराती भाषी हैं, तो गब्बर अमजद खान उर्दू भाषी। फिल्म की पहली नायिका हेमा मालिनी उसी तमिलनाडु से आती हैं जहां से हिंदी विरोधी स्वर उभर रहे हैं तो दूसरी नायिका जया भादुड़ी भी हिंदी विरोधी बोलने वाली ममता बनर्जी की मातृभाषा बांग्ला बोलती है।

प्रमुख कलाकारों के अलावा दूसरे कलाकारों और तकनीशियनों में भी राष्ट्रीय एकता के शोले दहकते दिखाई देते हैं। फिल्म का एक लोकप्रिय किरदार अंग्रेजों के जमाने के जेलर असरानी सिंधी भाषी हैं, तो सूरमा भोपाली जगदीप उर्दू भाषी हैं। यदि टेकरी पर बैठा केवल एक डायलॉग पूरे पचास हजार बोलकर सुर्खियां बटोरने वाला सांभा मैकमोहन सिंधी है, तो डाकूओं के हाथों मारे जाने वाला मासूम बच्चा सचिन पिलगांवकर महाराष्ट्र का बाशिंदा मराठी भाषी है। मौसी लीला मिश्रा ठेठ ब्रजभाषी हैं। विजू खोटे मराठी, ए के हंगल सिन्धी,सत्येन कप्पू पंजाबी हैं। जलाल आगा उर्दू भाषी है तो हेलेन बर्मा से भारत आयी प्रवासी हैं।

फिल्म के गीत पंजाबी आनंद बक्षी ने लिखे हैं तो उन्हें संगीत में पिरोने वाले राहुल देव बर्मन बंगाली थे जो मूलतः त्रिपुरा से आए थे। गानों को आवाज देने वाले किशोर बांग्ला भाषी है तो लता मंगेशकर मराठी और मन्ना डे बांग्ला भाषी । फिल्म के कैमरामैन द्वारका दिवेचा गुजरात के कोली परिवार से आते है जिन्हें ओबीसी का दर्जा मिला है। फिल्म के पात्रों में कोई ब्राह्मण है तो कोई मुस्लिम कोई पंजाबी है तो कोई ईसाई देश के लगभग हर प्रांत के लोगों और भाषा बोलने वालों ने इसमें काम किया और क्या जबरदस्त काम किया है यह किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। एक तरह से देखा जाए तो शोले हिन्दी फिल्म होते हुए देश के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हुए अनेकता में एकता का संदेश देती है जो निःसन्देह हिन्दी को थोपने वालों के मुंह पर तमाचा लगाने का काम करती है।

हिंदू नववर्ष पर जरूर निभाएं ये शुभ परंपराएं

गुड़ी पड़वा की शुरुआत चैत्र प्रतिप्रदा से होती है और इसी दिन से चैत्र नवरात्रि का प्रारंभ भी हो जाता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार इस बार नववर्ष का प्रारंभ 30 मार्च 2025 को हो रहा है। इसे विक्रम संवत भी कहते हैं, जो प्राचीन हिन्दू पंचांग और कैलेंडर पर आधारित है। राजा विक्रमादित्य ने खगोलविदों की मदद से इसे व्यवस्थित करके प्रचलित किया था। इसे नवसंवत्सर भी कहते हैं। आओ जानते हैं इसकी 5 शुभ परंपराएं।

घर की सजावट

सूर्योदय से पूर्व उठकर घर की साफ सफाई करने के बाद घर को तोरण, मांडना या रंगोली आदि से सजाया जाता है। इस दिन नव संवत्सर का पूजन, नवरात्र घटस्थापना, ध्वजारोपण आदि विधि-विधान किए जाते हैं। प्रत्येक राज्य में इस पर्व को वहां की स्थानीय संस्कृति और परंपरा के अनुसार मनाते हैं।

ध्वजा लहराना और गुड़ी लगाना

लोग प्रातः जल्दी उठकर शरीर पर तेल लगाने के बाद स्नान करते हैं। स्नान आदि से निवृत्त होने के बाद मराठी समाज गुड़ी को बनाकर उसकी पूजा करके घर के द्वारा पर ऊंचे स्थान पर उसे स्थापित करते हैं, जबकि अन्य समाज के लोग धर्म ध्वजा को मकान के उपर लहराते हैं। गुड़ी पड़वा दो शब्दों से मिलकर बना हैं। जिसमें गुड़ी का अर्थ होता हैं विजय पताका और पड़वा का मतलब होता है प्रतिपदा। इस दिन सभी हिन्दू अपने घरों पर भगवा ध्वज लहराकर उसकी पूजा करते हैं। इस कार्य को विधि पूर्वक किया जाता है जिसमें किसी भी प्रकार की गलती नहीं करना चाहिए।

पारंपरिक व्यंजन

इस दिन श्रीखंड का सेवन करके ही दिन की शुरुआत करते हैं। इसी के साथ घर आए मेहमानों को श्रीखंड खिलाया जाता है और श्रीखंड का वितरण भी किया जाता है। ऐसा करना बहुत शुभ माना जाता है। इसी के साथ इस दिन पारंपरिक व्यंजन तैयार किए जाते हैं जैसे पूरन पोली, पुरी और मीठे चावल जिन्हें लोकप्रिय रूप से सक्कर भात कहा जाता हैं। हर प्रांत के अपने अलग व्यंजन होते हैं।

जुलूस का आयोजन और मिलन समारोह

इस दिन जुलूस का आयोजन भी होता है। लोग लोग नए पीले परिधानों में तैयार होते हैं और एक दूसरे से मिलकर नव वर्ष की बधाई देते हैं। लोग अपने दोस्तों और परिवार के साथ उत्सव का आनंद लेते हैं और सड़क पर जुलूस का हिस्सा बनते हैं।

अन्य परंपराएं

इस दिन कड़वे नीम का सेवन आरोग्य के लिए अच्छा माना जाता है। इस दिन कोई अच्छा कार्य किया जाता है। जैसे प्याऊ लगाना, ब्राह्मणों या गायों को भोजन कराना। इस दिन बहिखाते नए किए जाते हैं। इस दिन से दो दिन के लिए दुर्गा सप्तशति का पाठ या राम विजय प्रकरण का पाठ की शुरुआत की जाती है। इस दिन नए संकल्प लिए जाते हैं। इस दिन किसी योग्य ब्राह्मण से पंचांग का भविष्यफल सुना जाता है। इस दिन हनुमान पूजा, दुर्गा पूजा, श्रीराम, विष्णु पूजा, श्री लक्ष्मी पूजा और सूर्य पूजा विशेष तौर पर की जाती है।

गुड़ी पड़वा के पीछे का मिथक

गुड़ी पड़वा को लेकर कई कहानियां और पौराणिक संदर्भ हैं। पवित्र हिंदू ग्रंथों में से एक, ब्रह्म पुराण में, यह उल्लेख किया गया है कि भगवान ब्रह्मा ने एक प्राकृतिक आपदा के बाद दुनिया को फिर से बनाया, जिससे सभी लोग मर गए और समय रुक गया। इस दिन, ब्रह्मा के प्रयास के बाद, समय फिर से शुरू हुआ और न्याय और सत्य का युग शुरू हुआ। इसी कारण से इस दिन भगवान ब्रह्मा की पूजा की जाती है। एक अन्य कहानी में कहा गया है कि भगवान राम 14 वर्ष का वनवास बिताने के बाद सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। यह दिन भगवान राम की रावण पर विजय का जश्न मनाता है। इसलिए, गुड़ी या ब्रह्मा का झंडा घरों में फहराया जाता है जैसे कि राम की रावण पर जीत के बाद विजय ध्वज के रूप में इसे अयोध्या में फहराया गया था। हालाँकि, गुड़ी का एक और ऐतिहासिक महत्व है। इतिहास गवाह है कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुगलों को हराया और राज्य के लोगों को मुगल शासन से मुक्त कराया। यह एक प्रमुख कारण है कि महाराष्ट्र के लोग इस दिन गुड़ी फहराते हैं। ऐसा माना जाता है कि झंडा किसी भी प्रकार की बुराई को घरों के परिसर में प्रवेश करने से रोकता है।

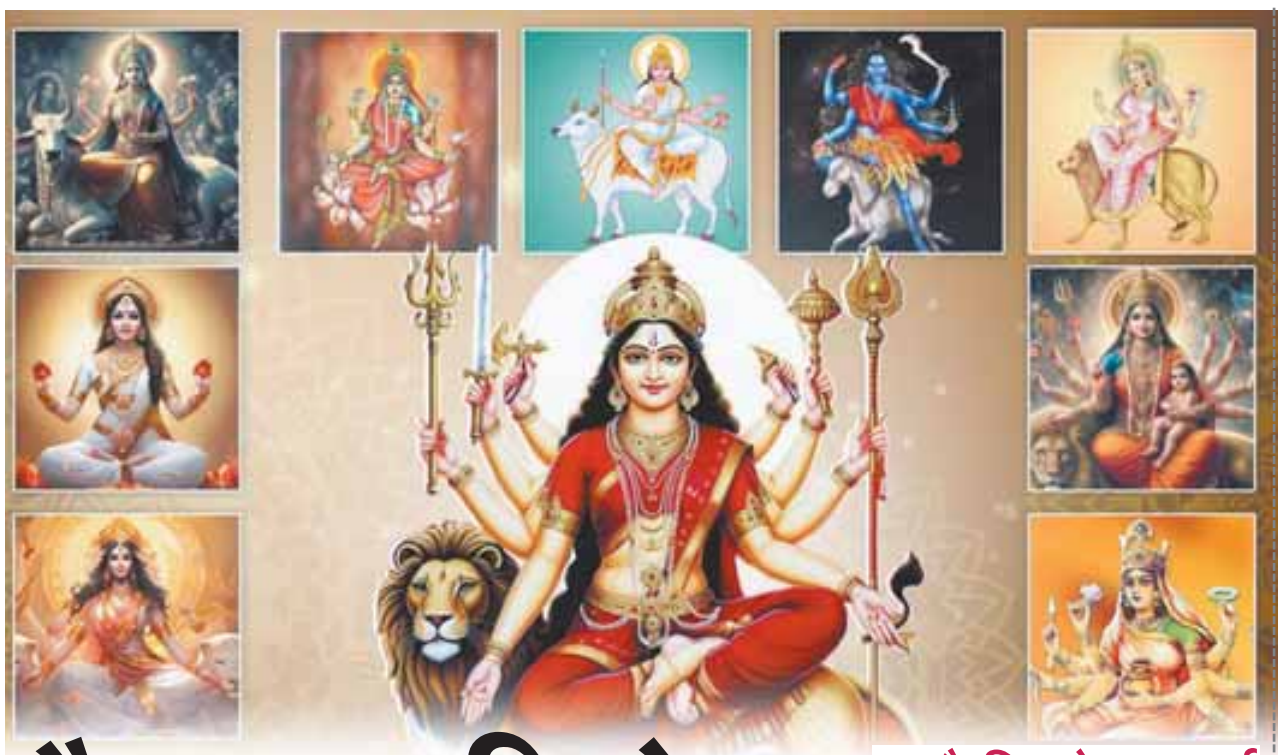

चैत्र नवरात्रि के दौरान करें मां दुर्गा के 9 स्वरूपों की पूजा

हिंदू धर्म में चैत्र नवरात्रि की पूजा का विशेष महत्व है। इस दिन मां दुर्गा की पूजा विधिवत रूप से करने का विधान है। साथ ही मां दुर्गा के 9 स्वरूपों की पूजा भी 9 दिनों तक पूरे विधि-विधान के साथ की जाती है। साथ ही चैत्र नवरात्रि के दिन से हिंदू नववर्ष का आरंभ भी होने जा रहा है। इसलिए यह दिन बेहद सौभाग्यशाली माना जा रहा है।

मां शैलपुत्री

शैलपुत्री मां दुर्गा के पहले रूप का नाम है। पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने की वजह से इनका नाम शैलपुत्री पड़ा। मां शैलपुत्री का वाहन बैल है और इनके दाएं हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का फूल है।

मां ब्रह्मचारिणी

मां दुर्गा के दूसरे रूप का नाम ब्रह्मचारिणी है। ब्रह्मचारिणी का अर्थ है तपस्या करने वाली। मां दुर्गा के इस रूप में वह तपस्विनी के रूप में नजर आती हैं और उनके दाएं हाथ में माला और बाएं हाथ में कमंडल होता है।

मां चन्द्रघण्टा

मां दुर्गा के तीसरे रूप का नाम चन्द्रघण्टा है। मां दुर्गा के इस रूप में उनके माथे पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र नजर आता है। यही वजह है कि इन्हें चन्द्रघण्टा कहा जाता है। मां दुर्गा के इस रूप में उनकी दस भुजाएं हैं और ये सिंह पर सवार हैं।

मां कुष्माण्डा

मां दुर्गा के चौथे रूप का नाम कुष्माण्डा है। माना जाता है कि जब सृष्टि नहीं थी तो कूष्माण्डा मां ने ही अपनी मुस्कान से ब्रह्मांड की रचना की थी। मां कूष्मांडा सिंह पर सवार हैं और इनकी आठ भुजाएं हैं।

मां स्कंदमाता

मां दुर्गा के पांचवें रूप का नाम स्कंदमाता है। स्कंदमाता का अर्थ है स्कंद की माता। स्कंदमाता मां दुर्गा के पुत्र कार्तिकेय की माता हैं। मां स्कंदमाता शेर पर सवार हैं और इनकी चार भुजाएं हैं।

मां कात्यायनी

मां दुर्गा के छठे रूप का नाम कात्यायनी है। माना जाता है कि कात्यायन ऋषि ने मां दुर्गा को अपनी पुत्री के रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी। मां दुर्गा ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर उन्हें पुत्री के रूप में जन्म दिया। मां कात्यायनी का वाहन सिंह है और इनकी चार भुजाएं हैं।

मां कालरात्रि

मां दुर्गा के सातवें रूप का नाम कालरात्रि है। मां दुर्गा के इस रूप में उनका रंग काला है और बाल बिखरे हुए हैं। मां कालरात्रि का वाहन गधा है और इनकी चार भुजाएं हैं।

मां महागौरी

मां दुर्गा के आठवें रूप का नाम महागौरी है। मां दुर्गा के इस रूप में उनका रंग अत्यंत गोरा है और वह शांत मुद्रा में नजर आती हैं। मां महागौरी का वाहन बैल है और इनकी चार भुजाएं हैं।

मां सिद्धिदात्री

मां दुर्गा के नौवें रूप का नाम सिद्धिदात्री है। मां दुर्गा के इस रूप में वह सभी सिद्धियों को देने वाली देवी के रूप में जानी जाती हैं। मां सिद्धिदात्री कमल के फूल पर विराजमान हैं और इनकी चार भुजाएं हैं।

चैत्र नवरात्रि पर बन रहे हैं विशेष संयोग

हिंदू धर्म में चैत्र नवरात्रि के दौरान, माता रानी का वाहन हर साल बदलता रहता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि नवरात्रि किस दिन शुरू हो रही है। वही आदिशक्ति का महापर्व नौ दिवसीय चैत्र नवरात्रि 30 मार्च से आरंभ होने जा रहा है। इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत रविवार के दिन से हो रही है। यह एक विशेष संयोग है, क्योंकि इस बार नवरात्रि 9 दिनों की बजाय 8 दिनों तक ही मनाई जाएगी। इसलिए, नवरात्रि का समापन भी रविवार के दिन ही होगा। जब नवरात्रि की शुरुआत और समाप्ति रविवार या सोमवार को होती है, तो माता रानी का वाहन हाथी होता है। हाथी को हिंदू धर्म में शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। इसलिए, हाथी पर सवार होकर माता रानी का आगमन भक्तों के लिए विशेष फलदायी होगा। इस वर्ष चैत्र नवरात्रि की शुरुआत कई शुभ योगों के साथ हो रही है, जो इस पर्व के महत्व को और भी बढ़ा देते हैं। नवरात्रि के पहले दिन रवि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, इंद्र योग और रेवती नक्षत्र का अद्भुत संयोग बन रहा है। ये सभी योग पूजा-पाठ और धार्मिक कार्यों के लिए अत्यंत शुभ माने जाते हैं।

नौ दिन के 9 कार्य

मूर्ति और कलश स्थापना

माता की मूर्ति लाकर उसे विधि विधान से घर में स्थापित किया जाता है। इसके साथ ही घर में घट या कलश स्थापना भी की जाती है। साथ ही एक दूसरे कलश में जावरे या जौ उगाए जाते हैं।

माता का जागरण

कई लोग अपने घरों में माता का जागरण रखते हैं। खासकर पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल आदि प्रदेशों में किसी एक खास दिन रातभर भजन-कीर्तन होते हैं। इन नौ दिनों में गरबा नृत्य का आयोजन भी होता है।

व्रत रखना

पूरे नौ दिन व्रत रखा जाता है। इसमें अधिकतर लोग एक समय ही भोजन करते हैं। प्रतिदिन दुर्गा चालीसा, चंडी पाठ या दुर्ग सप्तशती का पाठ करते हैं।

कन्या भोज

जब व्रत के समापन पर उद्यापन किया जाता है तब कन्या भोज कराया जाता है।

इनकी होती है पूजा

इस नवरात्रि में नौ देवियों में शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री का पूजन विधि विधान से किया जाता है।

नौ भोग और औषधि

शैलपुत्री कुट्टू और हरड़, ब्रह्मचारिणी दूध-दही और ब्राह्मी, चन्द्रघंटा चौलाई और चन्दुसूर, कूष्मांडा पेठा, स्कंदमाता श्यामक चावल और अलसी, कात्यायनी हरी तरकारी और मोइया, कालरात्रि कालीमिर्च, तुलसी और नागदौन, महागौरी साबूदाना तुलसी, सिद्धिदात्री आंवला और शतावरी।

नौ दिन के प्रसाद

पहले दिन घी, दूसरे दिन शक्कर, तीसरे दिन खीर, चौथे दिन मालपुए, पांचवें दिन केला, छठे दिन शहद, सातवें दिन गुड़, आठवें दिन नारियल और नौवें दिन तिल का नैवेद्य लगाया जाता है।

माता को अर्पित करें ये भोग

खीर, मालपुए, मीठा हलुआ, पूरणपोळी, मीठी बूंदी, घेवर, पंच फल, मिष्ठान, घी, शहद, तिल, काला चना, गुड़, कड़ी, केसर भात, साग, पूड़ी, भजिये, कद्दू या आलू की सब्जी भी बनाकर भोग लगा सकते हैं।

हवन

कई लोगों के यहां सप्तमी, अष्टमी या नवमी के दिन व्रत का समापन होता है तब अंतिम दिन हवन किया जाता है।

विसर्जन

अंतिम दिन के बाद अर्थात नवमी के बाद माता की प्रतिमा और जवारे का विसर्जन किया जाता है।

गुड़ी पड़वा का पर्व बेहद शुभ माना जाता है। इस साल यह 30 मार्च को मनाया जाएगा। यह दिन मराठी लोगों के नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। इस पर्व को युगादी चेती चंड और नव संवत्सर उगादी जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। इस शुभ अवसर पर महिलाएं अपने घरों को सुंदर गुड़ी से सजाती हैं जो शुभ शुरुआत को दर्शाता है।

क्यों खास है गुड़ी पड़वा

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र का एक महत्वपूर्ण पर्व है। हिंदू पंचांग के अनुसार, यह चैत्र महीने के पहले दिन मनाया जाता है। यह मराठी लोगों के नव वर्ष की शुरुआत का भी प्रतीक है। इस दिन मराठी समुदाय के लोग अपने घरों के बाहर समृद्धि के प्रतीक गुड़ी को लगाते हैं और पूजा करके गुड़ी पड़वा मनाते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह परंपरा पूरे साल खुशियां, सफलता और समृद्धि लाती है। इस साल गुड़ी पड़वा 30 मार्च 2025 को मनाया जाएगा। यह हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत 2082 और शुभ चैत्र नवरात्रि की शुरुआत के साथ भी मेल खाता है। युगादी, चेती चंड और नव संवत्सर उगादी जैसे विभिन्न नामों से जाना जाने वाला यह पर्व चैत्र प्रतिपदा उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है।

गुड़ी पड़वा का अर्थ

गुड़ी का मतलब है ध्वज यानी झंडा और प्रतिपदा तिथि को पड़वा कहा जाता है। यह रबी फसलों की कटाई का प्रतीक है। ऐसा कहा जाता यही वह दिन है, जब भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड के निर्माण की शुरुआत की थी। यह दिन महाराष्ट्र में बड़ी भव्यता और दिव्यता के साथ मनाया जाता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज से जुड़ा है गुड़ी पड़वा का पर्व

महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा का पर्व मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज की जीत के रूप में मनाया जाता है। इसे लोग विजय ध्वज के समान अपने घरों के बाहर फहराते हैं। यह पर्व हिंदू विजय और समृद्धि का प्रतीक है। क्यों खास है गुड़ी पड़वा का पर्व महिलाएं स्नान के बाद अपने घरों को सुंदर गुड़ी से सजाती हैं, जो शुभ शुरुआत को दर्शाता है। गुड़ी को पारंपरिक रूप से एक बांस की छड़ी का उपयोग करके तैयार किया जाता है, जिसके ऊपर एक उल्टा चांदी, तांबा या पीतल का बर्तन रखा जाता है। इसके बाद केसरिया रंग के कपड़े, नीम या आम के पत्तों और फूलों से सजाकर इसे घर के सबसे ऊंचे स्थान पर लगाया जाता है। इसके अलावा लोग अपने प्रवेश द्वारों को रंगीन रंगोलियों से सजाते हैं, और प्रसाद के रूप में पूरन पोली और श्रीखंड जैसे विशेष व्यंजन तैयार करते हैं।

ध्वज के बिना अधूरा है गुड़ी पड़वा का त्योहार

हिंदी कैलेंडर के अनुसार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से हिंदू नववर्ष की शुरुआत मानी जाती है। ऐसे में साल 2025 में 30 मार्च से हिंदू नववर्ष की शुरुआत होने जा रही है। भारत के कई राज्यों में हिंदू नववर्ष को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मराठी में इसे गुड़ी पड़वा कहा जाता है जो एक महत्वपूर्ण त्योहार है।

हिंदी कैलेंडर के अनुसार, गुड़ी पड़वा का त्योहार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर मनाया जाता है। इस दिन लोग नए वस्त्र धारण करते हैं और अपने घरों को सजाते हैं। इस विशेष अवसर पर भगवान विष्णु के साथ-साथ ब्रह्मा जी की भी पूजा की जाती है।

गुड़ी पड़वा पूजा विधि

सबसे पहले गुड़ी पड़वा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करलें। इसे बाद पूरे घर की अच्छे से साफ-सफाई करने के बाद घर के मुख्य द्वार को आम के पत्ते की तोरण लगाएं और घर को रंगोली से सजाएं। अब घर के किसी एक हिस्से में गुड़ी लगाएं और उसे फूलों से सजाएं। गुड़ी पड़वा के दिन पूरे परिवार के साथ विधि- विधान पूर्वक ब्रह्मा जी पूजा करें। तत्पश्चात गुड़ी फहराने के बाद भगवान विष्णु की विधि-विधान से पूजा करें।

चैत्र नवरात्रि के दौरान जरूर खरीदें ये चीजें घर में आएगी खुशहाली

चैत्र नवरात्रि का त्योहार नौ दिनों तक चलता है और इस दौरान मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। चैत्र नवरात्रि में खरीदारी करना शुभ माना जाता है। चैत्र नवरात्रि को किसी भी नए काम की शुरुआत के लिए बेहद शुभ माना जाता है। चैत्र नवरात्रि के दौरान सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। अब ऐसे में चैत्र नवरात्रि के दौरान कुछ ऐसी चीजें हैं, जिसे खरीदने से व्यक्ति के जीवन में खुशियों का आगमन हो सकता है।

चैत्र नवरात्रि के दौरान खरीदें मिट्टी का बर्तन

नवरात्रि के पहले दिन कलश स्थापना की जाती है, जिसके लिए मिट्टी के कलश का उपयोग किया जाता है। मिट्टी के कलश को शुद्ध और पवित्र माना जाता है, इसलिए इसका उपयोग शुभ कार्यों में किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में मिट्टी के बर्तन को समृद्धि का कारक माना गया है। इसलिए मां दुर्गा की पूजा के लिए मिट्टी के बर्तन ही खरीदें।

चैत्र नवरात्रि के दौरान खरीदें चांदी का सिक्का

चैत्र नवरात्रि के दौरान चांदी का सिक्का खरीदना बेहद शुभ माना जाता है। नवरात्रि में चांदी का सिक्का खरीदने से घर में सुख-समृद्धि और धन का आगमन होता है। नवरात्रि में चांदी का सिक्का खरीदने से सौभाग्य बढ़ता है और जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। चांदी के सिक्के को नवरात्रि पूजा में रखना शुभ माना जाता है।

चैत्र नवरात्रि के दौरान खरीदें जौ

जौ को सृष्टि की पहली फसल माना जाता है, इसलिए इसे पूजा में शामिल करना शुभ माना जाता है। नवरात्रि में जौ बोने से देवी दुर्गा प्रसन्न होती हैं और भक्तों को सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देती हैं।

चैत्र नवरात्रि के दौरान खरीदें पीले चावल

पीले चावल को शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। नवरात्रि में इनका उपयोग देवी दुर्गा की पूजा में किया जाता है, जिससे घर में सुख-शांति और समृद्धि आती है। पीले चावल का उपयोग देवी-देवताओं को आमंत्रित करने के लिए किया जाता है। माना जाता है कि पीले चावल अर्पित करने से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं और भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करते हैं।

चैत्र नवरात्रि के दौरान खरीदें श्रृंगार का सामान

चैत्र नवरात्रि के दौरान श्रृंगार का सामान खरीदना बहुत शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नवरात्रि में सोलह श्रृंगार का सामान खरीदने और मां दुर्गा को अर्पित करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है और घर में सुख-समृद्धि आती है।